अमृत

जुलाई, 1980
वर्ष 16 ❋ अंक 2
मूल्य 2.00

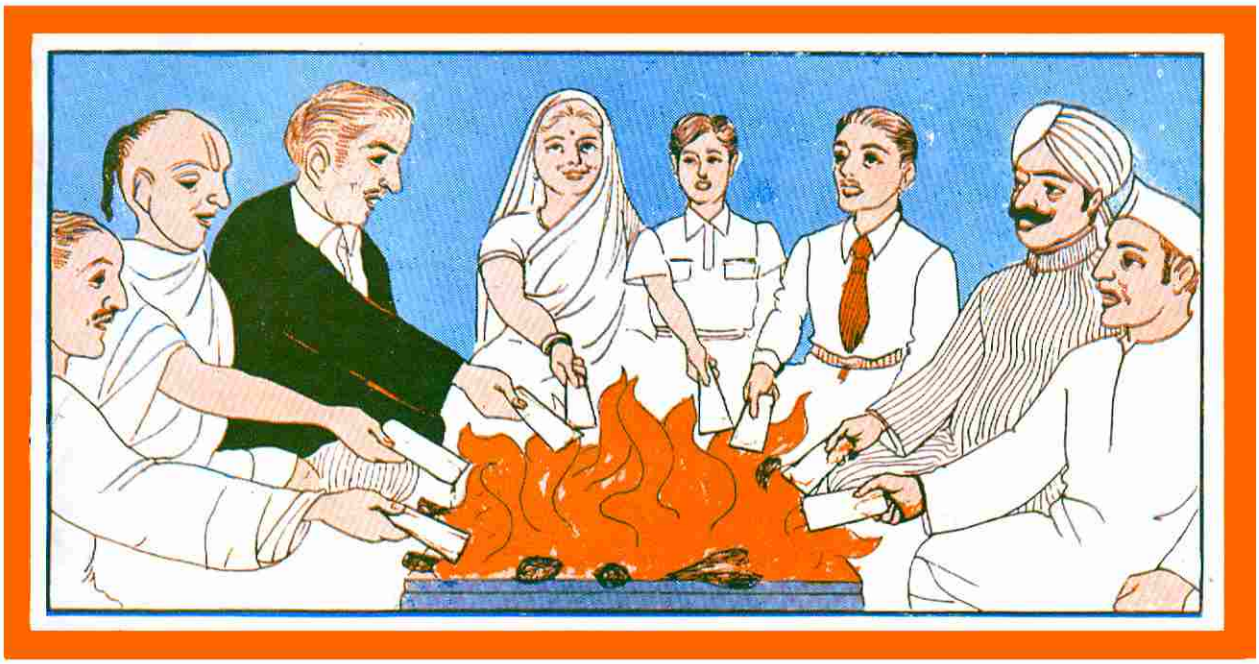

इस विश्व-कल्याणकारी महायज्ञ में योग ही अग्नि है, ज्ञान ही घृत है और इसमें सभी को अपनी कमियों तथा कमज़ोरियों की ही आहुतियाँ डाल कर सहयोग देना है। ऊपर के चित्र में बायें से दायें, अध्यापक अपनी कमी की आहूति देते हुए कह रहा है कि मैं बच्चों के चरित्र की अवहेलना नहीं करूँगा। धार्मिक नेता कह रहा है "मैं धार्मिक संकीर्णता तथा मन, वचन और कर्म के अन्तर की अग्नि समर्पित करता हूँ। वकील कह रहा—"मैं सत्य ही कहूँगा और सत्य ही कहलवाऊँगा।" माता कह रही है—"मैं घर में क्रोध-लीला, डांट-डपट और फ़िल्मों के अश्लील गीतों आदि को बन्द कर बच्चों के सदाचार की रक्षा करती रहूंगी। विद्यार्थी कह रहा है—"मैं अनुशासनहीनता और अध्यापकों के प्रति अपमान की आहुति डाल रहा हूँ। कर्मचारी कह रहा है : मैं काम से जी चुराने की प्रकृति भस्म कर रहा हूँ। व्यापारी कह रहा है—"मैं शोषण-भावना और कर-चोरी की प्रवृत्ति को अग्नि पर डाल रहा हूँ।' नेता कह रहा है—"मैं पर-निंदा, आत्मश्लाघा, दल बन्दी और कुर्सी के मोह की आहुति दे रहा हूँ। इस प्रकार की आहुतियाँ देने से ही विश्व का कल्याण होगा।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय (कासगंज) द्वारा दिसोली तहसील में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन वहाँ के प्रमुख व्यापारी भ्राता गौरीशंकर जी टेप काटकर कर रहे हैं। साथ में अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

यह चित्र गोकाक शहर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिक्षण शिविर के उद्घाटन के अवसर का है। चित्र में वहाँ के प्रसिद्ध व्यक्ति भ्राता कादम्बरीकर पुराणीक जी मोमबत्ती जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० उषा तथा अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र फतेहपुर में आयोजित बाल चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर का है। बाईं ओर को खड़े हुए संसद सदस्य भ्राता हरिकृष्ण शास्त्री उद्घाटन कर रहे हैं तथा उनके साथ में ब्र० कु० आत्मइन्द्रा, सर्जन डा० बी० के० अग्रवाल, डा० मिश्रा जी, ब्र० कु० विद्या व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र कॉलिज स्क्वायर (कटक) में हुई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। ब्र० कु० कुलदीप मैडिकल कॉलिज के प्रोफेसर भ्राता हरीशचन्द्र महन्ति को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं। साथ में अन्य बहन-भाई हैं।

अमृत-सूची

१. योगी भव, अर्जुन	१	१५. परफेक्ट बनकर रिस्पेक्ट पाने का सहज साधन	२२
२. विचार और व्याधि	४	१६. तुम हो महान (गीत)	२२
३. परियों का गीत	५	१७. चित्रों में	२३
४. रक्षा बन्धन और रक्षा	६	१८. एक नया अभियान	२७
५. राखी	९	१९. सूर्यवंशी देवता बनने के लिए धारणाएँ	२७
६. इक दुनिया नई बनानी है	१०	२०. वाराणसी में	२९
७. विश्वासकम् फलदायकम्	११	२१. हे शिवसंदेशी	३०
८. अब सौंपा है सब भार तुम्हें	१२	२२. कविता	३०
९. चित्रों में	१३	२३. मानव कल्याण का अधार सुचरित्र	३१
१०. मेरा अनुभव	१५	२४. बन्धनों से मुक्ति पाई	३३
११. गीता के भगवान	१६	२५. अभी नहीं तो कभी नहीं	३४
१२. तूफान ही तोफा लाते हैं	१७	१६. चित्रों में	३५
१३. एक भेंट वार्ता	१९	२७. आध्यात्मिक सेवा समाचार	३७
१४. दीदी दादी जी के प्रति	२१		

सम्पादकीय

योगी भव, अर्जुन !

साकार रूप में ब्रह्मा बाबा को अनेक वत्सों ने निकटता से देखा है। उनके बारे में सभी के मुख से यही बोल निकलते हैं कि उन्होंने पितृवत्, मातृवत्, भ्रातृवत्, मित्रवत् तथा मार्ग-दर्शक की न्यायी आचरण किया जो कि अलौकिक, अद्भुत एवं आदर्श था—ऐसा कि जिसका स्मरण कर हर्ष भी होता है और विस्मय भी। वे शिव बाबा के माध्यम तो थे ही परन्तु शिव बाबा से सुने हुए महावाक्यों तथा अपने अनुभवों एवं मंथन के अधार पर वे ऐसी शैली से ज्ञान देते कि रोम-रोम में एक अजीब मस्ती और एक अनोखा सरूर छा जाता। जब वे ज्ञान सुनाते तब उनके चितवन को देखते ही बनता। मानो वे ज्ञान सुनाते समय स्वयं उसमें केवल स्थिति ही नहीं बल्कि वे ज्ञान की गरिमा को, उसके मूल्य को, उसके महत्त्व को और उससे होने वाली सर्वोच्च प्राप्ति को देखते हुए उससे विभोर हो उठते हों। ऐसा लगता कि ज्ञान का झरना स्वाभाविक और सहज रूप से उनके मुख से निकसित होकर विकारों से तप्त आत्माओं को अमृत का मिठास, तरुवर की छाया की शीतलता और संजीवनी की तरह एक नया जीवन प्रदान कर रहा है। इस प्रकार वे एक आदर्श शिक्षक भी थे। कभी तो उनके शब्द श्रोताओं के मन को सत्य रूपी तीर के समान लगते थे। तीर तो एक निशाने पर लगता है। परन्तु उनके लक्ष्यभेदी शब्द-बाण तत्काल ही अनेकों के मन में पैठे असुर को बींध देते। अनेक स्वर थे उनकी ज्ञान-वंशी के। उसी से वह हर्ष और उल्लास भी इतना भर देते कि खुशी का पारावार नहीं रहता था और उसी से वे आत्मा के देवत्व को जागृत कर श्रोताओं को एक अलौकिक सुख का अनुभव कराते। इस प्रकार वे स्वयं ज्ञान-निष्ठ थे और ज्ञान द्वारा दिन-रात प्रभु-प्यासी आत्माओं की अथक सेवा में लगे रहते थे। परन्तु यदि गहराई से सोचा जाये तो वास्तव में वे मुख्य रूप से एक योगी थे—एक अत्यन्त उच्च कोटि के राजयोगी। ज्ञान की ओर वे विशेष ध्यान आकर्षित करते थे और कहते कि "ज्ञानी आत्मा मुझे प्रिय है।" जो व्यक्ति ज्ञान की मर्यादाओं के अनुसार कर्म नहीं करता था, उसे वे 'भक्त !' कह धीमे-से हँस देते। ज्ञान को वे अविनाशी रत्न आदि नाम देते थे और जिनकी बुद्धि में ईश्वरीय ज्ञान धारण न हुआ हो, उसके बारे में वे कहते कि "इसके डिब्बे में ठिकरियाँ हैं"। इस प्रकार वे नाना विधि ज्ञान के मूल्य को जताते थे परन्तु यदि उनकी कुल कथनी और करनी पर ध्यान दिया जाए तो वे अने मूल रूप

में और प्रभमत: तथा मुख्यत: (First & foremost) एक महान योगी ही थे।

यही कारण है कि यदि कोई ईश्वरीय स्मृति में न टिक कर ज्ञान की चर्चा की 'अति' में चला जाता तो वे उसे कहते—"बच्चे, टू मच" (Too much) में मत जाओ"। यदि कोई ज्ञान की गहराई में जाने के लक्ष्य से भी प्रश्न पूछता ही चला जाता तो वे उसके मन को मौन-स्मृति में लाने के लिए उसे कहते—"बच्चे, अधिक से क्या लाभ;मनमनाभव! मीठे बच्चे, ज्ञान का सार ग्रहण कर स्वरूप स्थित हो जाओ वरना विकर्म दग्ध नहीं हो सकेंगे।" यदि कोई ईश्वरीय सेवा करता तो बाबा उसे कहते—"सिक्कीलधे बच्चे, सर्विस तो खूब करते हो परन्तु ज्ञान रूपी तलवार में योग का जौहर भी तो चाहिए। जब तक योग रूपी जौहर नहीं होगा तब तक सेवा में भी सफलता नहीं मिलेगी।" यदि किसी के जीवन में दिव्य गुणों की धारणा न होती तो वे कहते—"योग ही नहीं है तो धारणा कैसे होगी?" इसी प्रकार वे कहा करते—"खाली ज्ञान तो कोरी पंडिताई है; योग के बिना वह काम की नहीं"। निस्सन्देह, वे ज्ञान का पलड़ा भी हल्का न होने देते, इसलिए वे कहा करते कि ज्ञान के बिना तो योग लग नहीं सकता" परतु उनका लक्ष्य योग-युक्त बनाना ही था और वे अपने जीवन में अपनी दृष्टि, बातचीत तथा चाल-ढाल से सदा एक योगी ही दीख पड़ते। योगी होने के कारण ही उनके नेत्र मुक्ति और जीवनमुक्ति की राह दिखाने की सर्च लाइट (Search Light) का काम करते, उनके बोल चित्त को हर लेते, मन को मन्त्र-मुग्ध कर देते और उनका हर कर्म सेवा रूप हो जाता। सेवा या धारणा भी उनके जीवन से अलग नहीं थे बल्कि उनके जागने, सोने, भोजन करने उठने-बैठने—सभी कर्मों में सेवा ही समाई हुई थी क्योंकि वे योग-युक्त थे। उनकी योग-युक्त स्थिति के प्रभाव को उनके सम्पर्क में आया हुआ कोई भी व्यक्ति भूल ही नहीं सकता। योग ने उनका कायाकल्प कर दिया था और उनके शरीर में एक मिक्नातीसी शक्ति भर दी थी। उनके नेत्रों को देखने से ऐसा लगता कि न जाने उनकी दृष्टि में कितने मैगावाट (Megawatt) पावर का जैनेरेटर (Generator) लगा हुआ है। ऐसा महसूस होता कि उनसे निकसित होने वाले योग के प्रकम्पन मन को एक आराम, एक सुख, एक शक्ति और अलौकिक स्नेह प्रदान कर रहे हों। बस, सभी का जो करता कि उनके पास बैठे रहें, उनकी बातें सुनते रहें, उन्हें निहारते ही रहें और उनकी दृष्टि की वृष्टि से आत्मन् में शक्ति और शान्ति का संचार कर लें अथवा उसकी बैटरी को भर लें।

कैसा योग ?

कैसा योग ? —वह जो एक कि साधना है, एक तपस्या है अथवा वह योग जिसे कुछ लोग 'समाधि' कहते हैं और कुछ तपस्या; कुछ इसे अवस्था मानते हैं और कुछ स्थिति। वास्तव में योग एक साधन है साधना नहीं। इससे मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति मिलती है, इसलिए ये साधन है। कई लोग प्राय: 'साधना' शब्द में कठिनाई और शारीरिक यातना को निहित मानते हैं परन्तु शिव बाबा ने हमें जो योग सिखाया है, उसे हमने ब्रह्मा रूप में सहज ही पाया है। उसमें शरीर को कष्ट या यातना देने का तनिक भी स्थान नहीं है; इस दृष्टि-कोण से वह साधना नहीं है। परन्तु क्योंकि इस योग का भी अभ्यास करना पड़ता है, आत्मा को एक विशेष प्रकार के सहज अनुशासन में ढालना होता है, उसे एक प्रशिक्षण मिलता है और एक प्रक्रिया अपनानी होती है और फिर उससे सर्वोच्च सिद्धि भी होती है इस अर्थ में यह साधना भी है। इसी तरह 'तपस्या' शब्द में प्राय: पुरुषार्थ के फल की इन्तज़ार का होना और अभ्यास के लिए अनेक प्रकार के कष्टों का हाना निहित माना जाता है। बाबा के जीवन में हमने योग को जैसे देखा तथा स्वयं जो योग का अभ्यास किया है, उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि इस अर्थ में योग एक तपस्या नहीं है क्योंकि शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा जो योग हमें सिखाया है, वह तत्क्षण प्रत्यक्ष फल देने वाला है; उसमें इन्त-ज़ार करने की बात नहीं है। फिर भी उसे तपस्या कह सकते हैं क्योंकि जैसे सोने को आग में तपाकर उसे शुद्ध किया जाता है वैसे ही इस योग की अग्नि द्वारा आत्मा के भी पूर्व विकर्म दग्ध होते हैं। और आत्मा पवित्र होती है और इसके अभ्यास के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा इसकी पूर्व सिद्धि तो चिरकाल अभ्यास के अन्त में ही मिलती है।

यह योग 'अवस्था' भी है क्योंकि इसमें सारा समय एक-रस टिक पाना कुछ काल के अभ्यास के बाद ही सम्भव हो पाता है और उस पराकाष्ठा की स्थिति से पहले तो अवस्था में अन्तर होने की सम्भावना बनी रहती है। यह योग वास्तव में एक स्थिति-विशेष का नाम है क्योंकि इसमें मनुष्य अपने आत्मिक स्वरूप में और परमात्मा की स्मृति में एक-टिक टिका होता हैं। उसे ही 'बिन्दु रूप में स्थिति' भी कहा जाता है और उसी का नाम 'बीज रूप स्थिति' भी है।

यही योग एक 'समाधि' भी है क्योंकि इसमें आत्मा निर्विकल्प होकर ईश्वरीय स्मृति में समा जाती है परन्तु यह सहज समाधि जड़ भाव को प्राप्त होने, सुध-बुध खोने, या एकदम संकल्प-शून्य होने वाली समाधि नहीं है।

बाबा प्रायः इसे एक सहज ही नाम देते। वे इसे 'याद की यात्रा' अथवा 'सब संग तोड़ एक संग जोड़, अथवा 'मनमनाभव, मामेकम्'···अथवा 'लग्न में मग्न होना' आदि—ऐसा नाम देना अधिक पसन्द करते। इसे ही वे 'आत्माभिमानी (Soul-Conscious) बनना, तथा 'सच्चे मन से परम प्रिय परमपिता (Most Beloved Father) को याद करना', उसके साथ बुद्धि का नाता जोड़ना आदि नाम भी देते। इन नामों से स्पष्ट झलकता है कि वे योग को कोई कठिन क्रिया नहीं मानते थे बल्कि मनुष्य जो स्वयं को भूल गया है, उस भूल को मिटाकर अब पुनः उस परमात्मा की स्मृति में सहज रूप से लौट आने को ही वे योग नाम देते।

इन नामों से कोई यह न समझ ले कि गुणात्मक दृष्टि से यह योग कोई बहुत साधारण कोटि का है क्योंकि वास्तव में इस योग में एक अद्भुत शक्ति समाई हुई है—ऐसी कि जिससे मनुष्य के संस्कार बदल जाते हैं, उसका आचरण श्रेष्ठ हो जाता है, उसमें सात्विकता का उत्कर्ष होता है, दिव्य गुण सहज ही धारण हो जाते हैं, कार्य क्षमता बढ़ती है, उसे आनन्द की उपलब्धि होती है, उसका मन शान्ति में रमा रहता है और उसके सभी दिव्य मनोरथ सिद्ध होते हैं, और उसके मुख से यही बोल निकलते हैं कि 'पाना था जो पा लिया और क्या बाकी रहा'। यही वह योग है कि जिससे मनुष्य इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करता है, मान अपमान, निन्दा-स्तुति इत्यादि में एक-रस स्थिति प्राप्त करता और सदा संतुष्ट रहता है। इसी योग की चर्चा करते हुए ही भगवान ने कहा है—योगी भव, अर्जुन !" —जगदीश

सूचना

ज्ञानामृत का जो अंक दस-सूत्री कार्यक्रम के बारे में चित्रमय विशेषांक छपना था वह जुलाई में न छप कर अब अगस्त अंक के रूप में आपको मिलेगा। उसके साथ ही रक्षाबन्धन तथा जन्माष्टमी से सम्बन्धित कुछ लेख भी होंगे।

२. ज्ञानामृत के इस जुलाई अंक में रक्षाबन्धन के बारे में जो गद्य, काव्य या नाटक आदि हैं, उन्हें आप समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में छपवा सकते हैं।

३. पिछले मास ज्ञानामृत में धूम्रपान, मद्यपान आदि से सम्बन्धित लेखों के पृष्ठ अधिक हो जाने के कारण समाचार तथा फ़ोटो नहीं छाप सके। उसके लिये सम्बन्धित क्षेत्र हमारी कठिनाई समझेंगे। इसलिये ही इस बार अधिक फ़ोटो तथा समाचार छापे जा रहे हैं।

४. जून मास का ज्ञानामृत अंक अब एक पुस्तक के रूप में छप रहा है। जिसे उसकी प्रतियाँ चाहिये हों, वह कृष्ण नगर सेवा-केन्द्र पर अलग से इस विषय में पोस्टकार्ड लिख दें। जिन्हें जून अंक की अधिक प्रतियाँ चाहिये हों, वे भी अपने सदस्यों को यह पुस्तक दे सकेंगे। —सम्पादक

विचार और व्याधि

ले० ब्रह्माकुमार, डाक्टर सत्यभान, शक्ति नगर, दिल्ली

प्रातः उठने से लेकर रात को सोने तक हमारे मन में कितने ही विचार आते हैं और समय, स्थान, और परिस्थिति के साथ विचार भी बदलते रहते हैं। हम अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा जो भी देखते, सुनते या बोलते हैं, उसके अनुसार विचार भी बदलते रहते हैं। यदि हम ध्यान से विचार करें तो पायेंगे कि हमारे जीवन में विचारों का बहुत गहरा महत्त्व है। आज विज्ञान ने जितनी प्रगति की है, वह सब संकल्प शक्ति, अर्थात विचार की ही देन है। उदाहरण के लिए न्यूटन जब बगीचे में विचार-मग्न बैठे थे तब सेब के पेड़ से एक सेब टूटकर नीचे गिर पड़ा। उनके मन में यह विचार आया कि यह सेब नीचे ही क्यों गिरा और बहुत सोच-विचार और प्रयोगों के निष्कर्ष से 'न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का नियम' (Newton law of Gravitation) बना।

हम जो कुछ सोचते-विचारते हैं उसका हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर तो प्रभाव पड़ता ही है मगर आज आयुर्विज्ञान (Medical sciences) ने यह सिद्ध कर दिखलाया है कि मन के विचार और स्थिति का शरीर पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी से सम्बन्धित विषय को लेकर आयुर्विज्ञान की शाखा साइकोसीमेटिक मैडिसन (Psycho-somatic medicine) बनी है जिसमें मानसिक स्थिति का शरीर (स्वस्थ/अस्वस्थ) पर प्रभाव देखा जाता है। इसके लिए हम एक उदाहरण लेंगे—

यदि हमें कोई ऐसा दुखद समाचार सुनाते हैं जिससे हमारी मानसिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तो उस समय हमें अच्छे से अच्छे पकवान भी खाने को मिलें तो हमारा खाने को मन नहीं करेगा और अगर खा भी लेते हैं तो उनका पाचन ठीक ढंग से नहीं होगा क्योंकि हमारे विचारों का प्रभाव मस्तिष्क के उच्च केन्द्रों (Higher Centres) पर पड़ता है यही उच्च केन्द्र पाचन ग्रन्थियों के स्राव को नियंत्रित करते हैं। पाचन-ग्रन्थियों के स्राव की कमी के कारण और ऑटोनोमिक तंत्रिका तंत्र (Autonomous nervous system) असन्तुलन के कारण आंतों की गति पर प्रभाव पड़ता है और अपचन, कब्ज़, पेचिस इत्यादि बीमारियाँ होती हैं। यहाँ पर हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि केवल इसी कारण ये सब व्याधियाँ होती हैं और बढ़ती हैं। यह तो मन का शरीर पर प्रभाव दिखाने के लिए दैनिक जीवन का एक साधारण-सा उदाहरण था।

कुछ मनोवैज्ञानिक तो यहाँ तक कहते हैं कि कब्ज़ से लेकर कैन्सर तक जितनी भी व्याधियाँ हैं उनमें मन की स्थिति और मानसिक तनाव अपना प्रभाव डालते हैं। हमारे विचारों का हमारे हाइपोथैलमस (Hypothalamus) पर सीधा असर पड़ता है। हाइपोथैलमस, हाइपोफ़ीज़ीकल ट्रैक्ट (hypophysical tract) द्वारा पिटयुटरी को नियन्त्रित करता है और पिटयुटरी (Pituitary) जो कि मास्टर ग्रन्थि कहलाती है, अपने स्राव द्वारा शरीर की अन्य पैरिफेरल एन्डोक्राइन ग्लैन्डस (Peripheral endocrine glands) को नियंत्रित करती है।

हाइपोथैलमस का ऑटोनामिक तन्त्रिका तन्त्र पर भी नियन्त्रण है। इसी तन्त्रिका तंत्र की नाड़ियाँ शरीर की विभिन्न ग्रन्थियों के स्राव को नियंत्रण करती हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि हाइपोथैलमस (Hypo thalamus) पर बुरा प्रभाव पड़ने से न्यूरो-एन्डोक्राइन प्रणाली का संतुलन बिगड़ जाता है जिसके फलस्वरूप एन्जाइम (Enzimes) हारमोन्स (Harmones) की अधिकता या कमी के कारण शरीर-क्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और मनुष्य अनेक व्याधियों का शिकार होता है।

हमारे विचारों और भाव-स्वभाव का शरीर की हर कार्य-प्रणाली पर प्रभाव पड़ता है

कुछ बीमारियां तो मानसिक तनाव से ही शुरू

होती हैं जैसे अर्टिकेरिया, रक्त चाप (Blood pressure) पौप्टिक अल्सर (Peptic ulcer) सिर-दर्द, मिरगी, हिस्टेरिया (Hysteria), एनोरेक्सिया नर्वीसा (Anorexia Nervosa), दमा (Bronchial asthma) इत्यादि, प्रत्येक शारीरिक व्याधि में मन के विचार अपना पाज़िटिव (positive) या नैगेटिव (Negative) प्रभाव डालते ही हैं।

यह देखा गया है कि दूसरे मरीज़ों की अपेक्षा न्यूमोनिया के वह मरीज जो मानसिक तनाव में रहते हैं, ठीक होने में ज़्यादा समय लगाते हैं।[1]

इसी प्रकार कामन कोल्ड (Common cold) जो कि सारे विश्व में सबसे आम बीमारी है, उन परिस्थितियों में ज़्यादा होती है जिनमें व्यक्ति मानसिक तनाव या उदासी (Depression) में होता है।

इसी प्रकार, क्षय रोग (जो कि भारतवर्ष और अनेक विकासशील देशों में बहुतायत में हैं) के लगने और उसके ठीक होने में हमारे भावावेश(Emotions) बहुत योगदान करते हैं।[2]

मानसिक तनाव के कारण हमारे शरीर में एन्टी बाडी (anti body) बनाने वाली ग्रन्थियाँ वा कोशिकायें अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर पातीं और व्यक्ति का बीमारी के प्रति विरोध कम होता जाता और हमारे शरीर का इम्युनोलोजिकल कार्य (Immunological mechanism) धीमा पड़ जाता है और व्यक्ति अनेक बीमारियों की पंक्ति में खड़ा हो जाता है और एक समय पर बीमारी अपना पूरा आक्रमण कर देती है।

परिस्थितियाँ तो प्रत्येक मनुष्य के जीवन-काल में आती हैं लेकिन परिस्थितियों में भी स्वः स्थिति बनी रहे और हम स्वस्थ (स्वः—स्वयं में, स्थ—स्थित) रहें, उसके लिए स्वयं को जानना अति-आवश्यक है।

मगर आज का मानव स्वयं को भूला बैठा है, तो स्वयं का बोध कराये कौन ? यह कार्य कोई मनुष्य संन्यासी, ऋषि मुनि या गुरू-गोसाईं नहीं कर सकते यह तो विश्वकल्याणकारी परमप्रिय परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव ही कर सकते हैं।

इस समय ज्ञानसागर परमात्मा शिव स्वयं इस धरा पर आकर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ई० वि० विद्यालय के माध्यम से ज्ञान और राजयोग सिखला रहे हैं जिससे अनेक जन्मों से विकार ग्रस्त मानव को भविष्य में २१ जन्मों के लिए पवित्रता के आधार पर देव पद की प्राप्ति होती है और मानव २१ जन्मों के लिए पूर्ण स्वस्थ हो जाता है इसलिए परमात्मा शिव को रूहानी सर्जन भी कहा जाता है। आप सभी को यह ईश्वरीय वर्सा लेने का पूरा अधिकार है इसलिए जल्दी से जल्दी आकर वर्से का अधिकारी बनें अब नहीं तो कभी नहीं।

(1) Psycho somatie medicine by Alis'air Munro Page. 4,1973.

(2) Psychosomatie medicine-by Alistan Munro Page 2, 1973.

परियों का गीत

ले० ब्रह्माकुमारी दिव्या, बम्बई

हम हैं बाबा की परियाँ
परियों का जीवन न्यारा
ज्ञान-योग के पर से
घर ले जाना कर्म हमारा

हमारे नहीं कोई रिश्ते
हम हैं दुनिया में फ़रिश्ते
शिवबाबा का पैग़ाम देना
नक से स्वर्ग बनाना
यही है अनोखा हमारा
कर्त्तव्य ये न्यारा प्यारा

ज्ञान योग की कला से
नर से नारायण बनाना
जग में हम कल का सवेरा
दूर करने घोर अन्धेरा

अतीन्द्रिय सुख के झूले में
झूलते हैं और झुलाते
ये ही है अलौकिक जीवन
और नारा है 'पावन बनाना' !
ज्ञान योग के बल से
विकारों को है भगाना !

रक्षा-बन्धन और रक्षा

ब्रह्माकुमार, सूरजकुमार, मधुवन, आबू

१. **भारत भूषण**—एक समाज सुधारक
२. **पदमा**—भारतभूषण की धर्म पत्नि
३. **पंकु**—पदमा की १० वर्षीय पुत्री
४. **शकुन्तला व प्रजा**—ब्रह्मा कुमारियाँ
५. **पंडित जी**
६. **दो बन्दूक धारी डाकू**

"प्रथम दृश्य"

पदमा के घर का दृश्य, घर में कुछ आधुनिक चित्र लगे हुए हैं, पदमा घर का काम काज कर रही है।

पंकु—माँ आज आप बहुत खुश लगती हैं।

पदमा—पंकु, तुम्हें पता नहीं, आज राखी का त्यौहार है। जल्दी हो घर की धुलाई सफ़ाई कर दूँ, फिर मुझे अपने छोटे भैया को राखी बाँधने जाना है। आज मुझे मेरे भैया की बहुत याद आ रही है। वह मेरा इन्तज़ार करता होगा।

पंकु—माँ, मैं किसको राखी बाँधूगी···?

पदमा—बेटी, भगवान तुम्हें भी जब कोई भाई देगा, जब तुम उसे राखी बाँधना। आ अब मुझे मदद कर।

पंकु—माँ, मैं तो पिता जी को राखी बान्धूगी···

पदमा—नहीं बेटी, राखी बहन भाई को ही बाँधती हैं।

पंकु—क्यों माँ, ऐसा क्यों है ?

पदमा—बेटी ऐसी ही रस्म चली आती है। यह त्यौहार भाई-बहन के पवित्र प्रेम का सूचक है।

पंकु—अच्छा तो माँ, आज से मैं रोज भगवान से प्रार्थना करूँगी कि वह मुझे भाई दें, तो मैं भी आपकी तरह खुशी से उसे राखी बाँधूगी।

भारत भूषण का प्रवेश—

(भारत-भूषण कुर्सी पर बैठ जाते हैं, बड़े उदास से हैं पंकु उन्हें बार-बार देख रही है।)

पंकु—पिता जी, नाश्ता तैयार है, आपकी तबियत ठीक नहीं लगती आज।

भारत भूषण—नहीं बेटी, ठीक है। आज राखी है बेटी···

पंकु—हाँ, माँ भी मामा जी को राखी बाँधने जायेंगी···

भारत भूषण—(स्वयं से) मेरी भी कोई बहन होती तो मुझे भी राखी बाँधती···

(नयन भर आते हैं)

पंकु—क्यों पिता जी···

भारत भूषण—बेटी, मेरी भी कोई बहन होती तो आज···

पंकु—पिता जी, आज मैं आपको राखी बाँधूगी···

भारत भूषण—आओ मेरी बेटी···(उठाकर गोद में बैठा लेता है) तुम जीवन में फलो-फूलो बेटी।

पंडित जी का प्रवेश—

पंडित जी—हमारे महाजन, भारत भूषण जी, नमस्कार।

भारत भूषण—नमस्कार पंडित जी, आइये··· आइये···विराजिये···

पंडित जी—आज राखी का पावन पर्व है, मैं आपको राखी बाँधने आया हूँ।

भारत भूषण—अवश्य बाँधिये···(हाथ बढ़ाते हैं)

पंडित जी—(राखी बाँधते हुए)—बड़े अच्छे भाग्य हैं हमारे, आप जैसे महाजनों को पाकर।

भारत भूषण—पाँच रुपये देते हैं···

पंकु—मम्मी, आप तो कह रही थी कि बहन ही भाई को राखी बाँधती हैं, परन्तु ये तो पंडित जी···

पदमा—बेटी पंडित भी बाँधते हैं, और तिलक भी देते हैं।

पंडित जी—बोलो बेटी पंकु, तुम भी राखी बंधवाओगी ?

पंकु—पंडित जी, मुझे बताओ, ये राखी क्यों बाँधते हैं, ये कब शुरू हुई ?

पंडित जी—बेटी प्राचीन काल में एक बार जब

इन्द्र ने स्वर्ग का राज्य हरा दिया तो उसकी धर्म पत्नी इन्द्राणी ने उसे राखी बाँधी थी और उसे राज्य वापिस मिल गया था। ऐसी कई कथाएँ हैं। कई हिन्दू वीरांगनाओं ने मुसलमान राजाओं को भी राखी भेजी थी और मुसलमानों ने उनकी रक्षा के लिए सैना भेजी थी। यहाँ भाई का फर्ज़ होता है कि वह बहन की रक्षा करे।

पंकु—परन्तु पंडित जी, मम्मी तो कह रही थी कि बहनें ही भाइयों को राखी बाँधती हैं, परन्तु इन्द्राणी ने तो अपने पति को राखी बाँधी फिर तो मम्मी आप भी पिता जी को राखी बाँधना···

(सभी हँसते हैं)

पंडित जी—बेटी, ये तो सब दंत कथाएँ हैं···

अच्छा तो अब मैं जाता हूँ···और जगह भी जाना है···

पंकु—मम्मी, हमारे मामा जी तो छोटे हैं, वो आपकी रक्षा कैसे करेंगे और वो तो अपने घर में हैं, वो कैसे आपकी रक्षा करेंगे···

पदमा—बेटी ये तो भारत की परम्परायें हैं। इस तरह भाई-बहन मिलते हैं, उनका पवित्र प्यार बढ़ता है···इस संसार में प्रेम ही तो बड़ी चीज़ है।

(पर्दा बन्द होता है)

"द्वितीय दृश्य"

ब्रह्माकुमारी आश्रम का दृश्य···लाल प्रकाश··· प्रातः काल का समय, शकुन्तला व प्रज्ञा योग में बैठे हैं···

परमपिता परमात्मा शिव की आवाज़···

"बेटी, जाओ···आज सभी को पवित्रता की राखी बाँधकर आओ और सभी को बताओ कि पवित्रता ही भारत की रक्षा करेगी।"

ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, प्रज्ञा और एक भाई हाथ में थाली व टेपरिकार्डर लेकर भारत-भूषण के घर जाते हैं।

भारत भूषण—आइये बहन जी···आपका पत्र मिल गया था। हम तो इन्तज़ार ही कर रहे थे।

शकुन्तला—भारत भूषण जी, आज राखी का पावन पर्व है, जानते हो, ये कब से शुरू हुआ था?

भारत भूषण—ये हमारी पंकु आज हमसे यही पूछ रही थी, परन्तु हम इसे सन्तुष्ट नहीं कर सके।

शकुन्तला—देखो भैया, कलियुग के अन्त में जब स्वयं भगवान इस सृष्टि पर आते हैं तो वो मनुष्य को पवित्र देवता बनाने के लिए मनुष्यों को पवित्रता की राखी बाँधते हैं। उसी की यादगार अब तक चली आ रही है। क्योंकि परमात्मा ने ज्ञान कलश बहनों को दिया था, और बहनों ने वो परमात्मा का ज्ञान अमृत सारे विश्व में बाँटा था, और सभी को पवित्रता की राखी बाँधी थी, इसलिए आज तक भी बहनें भाइयों को राखी बाँधती हैं। और जिन आत्माओं ने ये पवित्रता की राखी बाँधी थी, वो ही सच्चे ब्राह्मण कहलाये थे, इसलिए आज ब्राह्मण भी राखी बाँधते हैं।

पदमा—और बहनें तिलक भी देती हैं, यह भी पवित्रता का ही प्रतीक है।

शकुन्तला—क्योंकि आत्मा मस्तक में रहती है, इसलिए मस्तक पर आत्म-स्मृति का तिलक लगाया जाता है। अर्थात् आत्मा को पवित्र बनाने के लिए स्वयं को आत्मा समझना ज़रूरी है।

पदमा—हाँ, पंडित जी भी कुछ ऐसी ही बातें सुना रहे थे कि इन्द्र ने जब इन्द्राणी को राखी बाँधी तो उसे पुनः स्वर्ग का राज्य मिल गया।

शकुन्तला—हाँ, इसका यही अर्थ है कि इन्द्र व इन्द्राणी ने पवित्रता का व्रत अपनाया, तो उन्हें पुनः स्वर्ग की प्राप्ति हुई।

पंकु—हाँ, मम्मी दीदी ने ठीक बात बताई।

शकुन्तला—आओ हम सभी को राखी बाँधे···

"सभी राखो बाँधते हैं"

गीत बजता है···

सभी गुणों में पवित्रता, है ऊँच और महान,
पवित्र बनो, श्रेष्ठ बनो, कहते शिव भगवान···

यह राखी स्वयं परमात्मा ने भेजी है। देखिये, कोई भाई किसी बहन की कहाँ तक रक्षा कर सकता है। यह पवित्रता ही मनुष्य की रक्षा करती है।

प्रज्ञा—सभी को तिलक देती है···

आज से आप स्वयं को देह न समझना, बल्कि एक चेतन आत्मा समझना।

शकुन्तला—भारत भूषण जी, आप तो बहुत सा समाज सुधार का कार्य करते हैं। परन्तु अनेक प्रयत्नों के बाद भी समाज का पतन हो रहा है। समाज या देश की रक्षा के लिए अब आवश्यकता है पवित्रता के बल की। इसके बिना भाषण और राशन से कुछ होने वाला नहीं है।

भारत भूषण—हाँ, यह बात तो माननीय है। महात्मा गाँधी ने भी देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सभी को पवित्रता का ही पाठ पढ़ाया था।

शकुन्तला—अब पुनः विश्वपिता, परमपिता शिव भारत को रावण की परतन्त्रता से मुक्त कराने के लिए, अर्थात् भारत को स्वर्ग बनाने के लिए पुनः पवित्रता की राखी बाँध रहे हैं।

भारत भूषण—(दस रुपये देते हुए)—मेरी ये छोटी सी भेंट स्वीकार करो।

शकुन्तला—भैया जी, हम आपसे खर्चा तो लेगी, परन्तु ये नहीं।

भारत भूषण—बोलो हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं···

शकुन्तला—आप तीनों अपना एक एक अवगुण हमें दे दीजिए—क्षण भर के लिए सन्नाटा···

भारत भूषण—(हँसते हुए)—बड़ा अनोखा दान माँगा, अवश्य देगें···मुझे कभी-कभी क्रोध आ जाता है···मैं अपने क्रोध का दान देता हूँ···

शकुन्तला—यह तो बहुत अच्छा, सभी पर प्रेम की बरसात करना। परन्तु सच्चे देश-प्रेमियों को तो भारत की रक्षा के लिए पवित्रता को अपनाना चाहिए आप तो सच्चे देश-भक्त हैं।

भारत भूषण—आप तो सचमुच शक्ति अवतार हैं, आज मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजीवन पवित्र रह-कर भारत की सच्ची सेवा करूँगा। आपकी दिव्यता मुझे पवित्रता की प्रेरणा दे रही है।

पदमा—मैं भी कभी-कभी चिड़चिड़ी सी हो जाती हूँ, आज से सदा खुश रहूँगी।

पंकु—मैं आज से कभी भी रोऊँगी नहीं।

शकुन्तला—बहुत अच्छा, लो ये मीठा प्रसाद। इसे खाकर आप सभी अति मीठे बन जाओ।

भारत भूषण—बहन जी, आज का शुभ दिन हमें कभी न भूल पायेगा। आज से हमारे जीवन में कुछ अद्भुत क्षणों का प्रारम्भ हुआ।

ब्रह्माकुमार भाई—ये बहन भाई का नाता अब अमर रहेगा। आप तीनों ही हमारे आश्रम पर आकर राजयोग सीखो और भारत के उत्थान की वास्तविक योजना को साक्षात्कार करो।

पदमा—अवश्य, हम तीनों ही कल आयेंगे।

इस प्रकार तीनों आश्रम पर जाकर राजयोग सीखते हैं और पवित्र गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं।

"तृतीय दृश्य"

रात्री ११ बजे का समय, सड़क पर लाइट जल रही है। भारत भूषण कहीं से भाषण करके लौट रहे हैं। लम्बा कुर्त्ता, पाजामा पहने, कुर्त्ते पर सुनहरा बैज चमक रहा है। भारत भूषण धीमी योग-युक्त चाल से चल रहे हैं।

दो बन्दूकधारी डाकू उसे पकड़ लेते हैं

डाकू—जो कुछ भी तुम्हारे पास हो, रख दो, नहीं तो···भारत भूषण, उन्हें धैर्य से देखता है।

डाकू—घूरता है, पता नहीं, हम कौन हैं? जान प्यारी है तो···

भारत भूषण—(दृष्टि देते हुए)—मालूम है आप कौन हैं। आप भगवान की सन्तान, आत्माएँ हैं!

डाकू—(कुछ सहमे से)—निकालो तुम्हारे पास क्या है?

भारत भूषण—मेरे पास रत्न हैं···

डाकू—जल्दी निकालो···

भारत भूषण—मेरे पास ऐसे रत्न है जिन्हें पाकर आप २१ जन्म भरपूर जीवन बिताओगे। परन्तु मैं तुम्हें वे रत्न एक शर्त पर दूँगा।

डाकू—क्या शर्त है तेरी?

भारत भूषण—यही कि आज के बाद ये पाप का धन्धा छोड़ दो।

डाकू—बकवास करता है,···निकालता है या नहीं···

भारत भूषण—भाइयो, अब तो मैं आपके वश हूँ···मैं सब-कुछ आपको दे दूँगा···परन्तु आप धैर्य से मेरी बात तो सुनो···

डाकू—कहो, क्या कहना चाहते हो?

भारत भूषण—तुम जिस शरीर और शरीर के सम्बन्धियों के लिए ये पाप कर्म कर रहे हो, वे सब विनाशी हैं, तुम तो पवित्र चेतन आत्मा हो। उसके लिए भी कुछ करो।

डाकू—तुम बातों से हमें बहकाना चाहते हो···

बन्दूक सम्भालता है···

भारत भूषण – योग-युक्त होकर उसे शक्तिशाली दृष्टि देता है—

डाकू—(हाथ कांपते हुए)—मुझे न जाने क्या हो रहा है···बन्दूक हाथ से छूट रही है।

दूसरा डाकू—यह देखकर फौरन निशाना लगता है—

उसे भारत भूषण का चेहरा दिव्य नज़र आता है जिसके चारों ओर प्रकाश फैल रहा है।

उसका हाथ भी घोड़ा नहीं दबा पाता। वह अपने को असमर्थ पाता है, दोनों डाकू भारत भूषण के चरणों में गिर पड़ते हैं। भारत भूषण के कानों में आवाज गूँजने लगती है···

"पवित्रता ही मनुष्य की रक्षा करती है"

पर्दा गिरता है

राखी

ब्र० कु० आत्म प्रकाश, (आबू)

मैं राखी बन्धन को आई भैया,
मैं पावन राखी लाई भैया।

राखी रक्षा करेगी तुम्हारी सदा,
झूठे बन्धन को तोड़ चलेगी सदा,
तुम राखी का बन्धन निभाना बस,
राखी चिन्ता हरेगी तुम्हारी सदा,
ये जीवन की प्यास बुझायेगी,
मैं राखी का धागा लाई भैया,
मैं राखी·····

ये प्रेम सिखाती है सच्चा
जग के सब झगड़े मिटायेगी,
पापों में बहते मानव पर
ये अमृत धार बहायेगी
ये प्रभु से प्रीत जुटायेगी
मैं पावन बन्धन लाई भैया,
मैं राखी·····

लो आज मैं तुमको तिलक करूँ
तुम राज तिलक को पाओगे
दुनिया की झूठी तृष्णा से
तुम क्षण भर में बच पाओगे,
मैं शुद्ध रूप आत्म-पन का,
ये दिव्य तिलक लाई भैया,
मैं राखी·····

दो खर्ची मुझे निज पापों की
मैं खज़ाने देने आई हूं,
शिव रक्षा करेगा तुम्हारी सदा
मैं राह दिखाने आई हूं,
प्रतिज्ञा करो, तुम पावन बन
भारत की रक्षा करोगे भैया,
मैं राखी·····

पावन बन इस सारे जग को,
शिव का सन्देश सुनाना तुम,
जो अन्धकार में भटके हैं
उनको प्रकाश दिखाना तुम,
मैं ज्ञान-दीप ले हस्तों में
अन्धियारा मिटाने आई भैया,
मैं राखी बन्धन·····

इक दुनिया नई बनानी है

ले० ब्रह्माकुमार किशनचन्द, सहारनपुर

हर चेहरे पे रौनक हो हर चेहरे पे भाई चारा हो
हिम्मत व उल्लास हो सब में कोई न हिम्मतहारा हो।
हर घर में फ़रिश्ते बसते हों झगड़ों का कहीं नाम न हो
शान्ति के बादल बरसते हों पुलिस का कोई काम न हो
दुनिया में कहीं फ़ौज न हो सब में प्यार रूहानी है
इक दुनिया नई बनानी है···

प्यार की वायु चलती हो नफ़रत का कहीं नाम न हो
हर व्यक्ति खुशी से जीता हो ग़म का कोई काम न हो
कोई रोगी दुनिया में न हो, हस्पताल का नाम न हो
कोर्ट कचहरी वहाँ न हो वकीलों का कोई काम न हो
ओ भारत के वीर सिपाहियो, ऐसी दुनिया लानी है
इक दुनिया नई बनानी है·····

विज्ञान सृजन का काम करेगा पुष्पक को बनायेगा
दुर्घटना-रहित सदा वे होंगे ऐसा युग अब आयेगा
धीरज धर मनुवा धीरज धर दुःख के मेघ हट जायेंगे
सच कहता हूं हम सब मिल के खुशी के नग़मे गायेंगे
बोलो-बोलो भाई और बहनो कैसी यह बात सुहानी है
इक दुनिया नई बनानी है·····

पूरे विश्व में भारत का झण्डा लहरायेगा
बैकुण्ठ कहो चाहे तुम जनत भारत ही कहलायेगा
दिल्ली राजसिंहासन पर श्रीनारायण का आसन होगा
हुक्म श्री नारायण का श्री लक्ष्मी का शासन होगा
पाँचों तत्व हों कबज़े में ऐसी दुनिया आनी है
इक दुनिया नई बनानी है·····

पुरुषार्थ हमें ही करना है दुनिया हमें बनानी है
हम बने सब सेना हैं शिवबाबा एक सेनानी है
बाबा एक डायरेक्शन देता बच्चे मुझको याद करो
आत्मा रूप में भाई-भाई हो इसको पक्का याद करो
दुनिया तो इक नाटक है केवल एक कहानी है
इक दुनिया नई बनानी है·····

आओ मिल कर करें वायदा विकारों से दूर रहेंगे
भारत में शिव बाबा आया अब तो यह मशहूर करेंगे
इसी वर्ष प्रतक्ष है करना 'बाप' कौन, 'दादा' है कौन
ज्ञान योग की चर्चा करना वरना रहना हम को मौन
ज्ञान का बीज छिटकते जाना, योग का देना पानी है
इक दुनिया नई बनानी है·····

विश्वासकम् फलदायकम

दृढ़ निश्चय ही मानव के जीवन को सर्वोत्तम सफ़लताओं की कुन्जी है यदि संसार के विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन में सफ़लताओं पर ध्यान दें तो मालूम होगा कि प्रत्येक का आत्म विश्वास अर्थात् दृढ़ निश्चय ही उसकी सफ़लता का एक मुख्य कारण बना। विजय का रहस्य ही अटल विश्वास है। मानव की सम्पूर्ण सफ़लताओं का भवन आत्म विश्वास पर ही टिका हुआ है। यदि दृढ़ निश्चय रूपी नींव आपकी पक्की है तो तूफ़ान भी आपकी जीवन रूपी नाव को टस से मस नहीं कर सकता। आत्म विश्वास के बल पर आप उस कार्य में भी सफ़ल हो सकते हैं, जिसे आप असम्भव मान कर बैठे हैं। निश्चय-बुद्धि मानव के लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। दृढ़ निश्चय को जागृत करके ही हम अपना बल दुगना कर सकते हैं।

सन्त कबीर ने भी दृढ़ निश्चय की सार्थकता को प्रकट करते हुए अपने शब्दों में लिखा है, 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। कह कबीर जिन पाईए, मन की ही प्रतीत।' अर्थात् अगर हमने दृढ़ निश्चय द्वारा स्वयं को जीत लिया है तो उसी मुताबिक ही हमें कामयाबी हासिल होती जाती है। आज जिन आत्माओं ने उसे पहले जाना और पहचाना और अटूट निश्चय हो गया कि सत्यमेव ही परम-पिता परमात्मा 'शिव' है तो क्या फिर वह आत्मा किसी दूसरे दर को देखेगी? कदापि नहीं! भूले-भटकों को अगर अपनी मंज़िल मिल जाए तो क्या वह उसे पुनः भूलाने की कोशिश करेगा? इसमें भी हृदय गवाही नहीं देगा। वह वात्सल्य जो एक तात-मात न दे सके, स्वयं परमात्मा आकर दे। क्या उससे किनारा हो सकता है? इतिहास भी साक्षी है कि इतने ऋषियों-मुनियों ने जंगल की राह ली और स्वयं को प्रियतम प्राप्ति के लिए सताया, बुद्ध, महा-बीर सरीखों ने आराम ऐश्वर्य को ठोकर मारकर आत्मानुभूति के लिए वन प्रस्थान किया और फिर भी ये ईश्वर की पूर्ण रूप से विवेचना ना कर सके परन्तु आज भगवान् स्वयं मिलकर नित्य-प्रति अपने अंक में लाड़-पुचकार करे, तो क्या ऐसे बाप के निश्चय में कमी हो सकती है? दृढ़ निश्चयी आत्मा सदैव उसकी श्रीमत पर तत्पर है। उसके मार्ग में चाहे कितनी भी परीक्षाएं आएं, चाहे उसे कितनी भी आलोचनाएं और कठिनाईयाँ सहन करनी पड़ें, वह अपने पुरुषार्थ में दृढ़ (Persistent) होता है; अर्थात् अपने लक्ष्य में अटूट होता है। वह तन और जन के विघ्नों से भी रुकता नहीं। वह आलोचना या आराम की इच्छा को भी अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने देता। वह अपने दृढ़ निश्चय में सतत होता है। "मैं जो चाहे कर सकता हूं" यह ही आत्म-विश्वासी का मूलमन्त्र है। "असम्भव नहीं कुछ भी" यह ही उसकी दृढ़ता का द्योतक है।

दृढ़ निश्चय अर्थात् आत्म विश्वास के बिना हम प्रगति के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकते। हमारी सफ़लता हमारे आत्म विश्वास के आगे नहीं जा सकती, वह तो आत्म विश्वास का अनुकरण करती है। हमारे संकुचित विचार हमें अपनी सीमा बन्धन में बाँध देते हैं, उन्हें लाँघ कर जब तक हम आत्म-विश्वास के राज्य में पग नहीं धरते तब तक हम अपनी आशा आकांक्षाओं एवं स्वप्न को पूरा नहीं कर सकते। अगर हमने दृढ़ निश्चय को छोटा रखा तो उसमें ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव भी कम आ पाएगा।

विश्वास ही वह सोपान है जिस पर चढ़ कर मनुष्य सभ्यता की चोटी पर चढ़ पाया है। जैसे विवेचनीय बात है कि एक पर्वतारोही जब एक पहाड़ की ऊँची चोटी को देखता है, जो ढलान सी एवं सीधी प्रतीत होती है, तो न जाने उसके हृदय की कम्पन किस धुन पर चलती होगी। कहाँ तो वह गगन चूम्बी पर्वत की चोटी और कहाँ फिर यह पृथ्वी का धरातल जहां वह खड़ा है। परन्तु बीच के ऊबड़-खाबड़ रास्तों को देखकर वह घबराता है। अगर तनिक-सा भी गिर गया तो न जाने हड्डी-पसली कहाँ होगी? परन्तु हृदय को थाम कर लक्ष्य को देखकर,

दृढ़ निश्चय रूपी पाँव फिर धीरे-धीरे शैल पर रखने प्रारम्भ कर देता है। रास्ते में न जाने कितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है अर्थात् यहाँ तक कि अपनी मंजिल की बहुत थोड़ी दूरी पर ही उसका दिल टूटने लगता है। मैं कितनी मंज़िल चढ़ आया हूं परन्तु केवल दस फुट ही अब उसके लिए शंकर की चोटी लगती है। दृढ़ता रूपी नींव, लक्ष्य रूपी मंज़िल को देखकर अब वह उसे भी पार कर गया है। अब वह पहाड़ रूपी सबसे ऊँची चोटी की मंज़िल पर है। जिस संसार में वह खुद रहता था, आज स्वयं सारे संसार को साक्षी दृष्टा होकर देख रहा है। उसे ऐसा लगता है कि सारा संसार अब उसके पाँवों के नीचे है। जिस पहाड़ की सीधी ढलानें उसे भयभीत कर रही थीं, मानो आज वह ही दोनों हाथ जोड़ कर उस पर्वतारोही से क्षमा-याचना कर रही हों। वह राही आज दुर्गम पथ को पार करके सुमीर-सुमीर मन्द-मन्द वायु में विचरण कर रहा है। अब उसके मन की छटा न जाने क्या होगी। नए-नए विचारों का सृजन हो रहा होगा। यह सभी उसके दृढ़ निश्चय रूपी पुरुषार्थ की ही सफलता है।

अतएव विश्वास ही वह जीवन ज्योति है जो अन्धकार में प्रकाश दिखाती है। विश्वास के अभाव से ही जीवन में संकट तथा असफ़लताएँ आती हैं। अतः अपने आपको ईश्वरीय सुझाव देकर मनुष्य आत्म-विश्वास की कमी दूर कर सकता है। हम सभी आत्माएं सर्वशक्तिवान बाप की सन्तान हैं। निर्बल हृदय होना बाप को पसन्द नहीं, उसने हमें सफ़ल होने के लिए ही सृष्टि पर भेजा है।

जीवन का विष क्या है—डर, निराशा और सन्देह। जीवन का अमृत क्या है—उत्साह, शान्ति और आत्म-विश्वास। मानव को जब उस प्रभु की शक्ति तथा उससे अपने सम्बन्ध की पहचान हो जाती है, तब वह आत्म-विश्वासी तथा विजयी बन जाता है, तब संसार की समस्त शक्तियाँ उसकी सहायक बन जाती हैं। दृढ़ निश्चय ही संसार के गौरवमय अंश हैं। अतएव कथयते—'विश्वासकम् फलदायकम्'

कविता

'अब सौंपा है सब भार तुम्हें'

ब्र० कु० अश्विनी, पाली

अब सौंपा है बाबा मैंने, इस जीवन का सब भार तुम्हें।
ये जीत हार सब तुम जानो, माँ-बाप उन्हें माना मैंने॥
निश्चय मेरा है एक यही, तुमको प्रत्यक्ष करूँगा।
सर्व सम्बन्ध का प्यार तुम्हें, अर्पित है आज किया मैंने॥

रहता हुआ प्रवृत्ति में भी, कमल-वत्-पर-वृत्ति में रहूँ!
इस जीवन नैया की बागडोर, हे सतगुरु तेरे हाथ करूँ॥
ब्रह्मा के कुल में जन्म लिया, और शिव वंशी कहलाता हूँ।

कल्प-पूर्व वत् फिर माया पर, विजय पाने आया हूँ॥
रोम-रोम में याद तुम्हारी, निरन्तर ही सहज रहे।
हो नाश तमाम विक्रर्मों का, माया भी पुनः फिर नमन करे।
मेरे संकल्प और कर्म हों ऐसे कि जन-जन में उत्साह बढ़े॥

यह चित्र जयपुर (किशनपोल बाजार) में स्थित सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। प्रसिद्ध समाज सेवक भ्राता देवीशंकर तिवाड़ी को ब्र० कु० सरोज चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

यह चित्र बीदर में आयोजित राजयोग शिविर का है। वहाँ के डिप्टी कमिश्नर सपरिवार राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं।

इस चित्र में कोल्हापुर में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी कर रहे हैं।

जोगिन्दर नगर में आयोजित प्रदर्शनी को देखने के पश्चात् कुछेक विशिष्ठ व्यक्ति ब्र० कु० बहनों के साथ खड़े हैं।

यह चित्र जयपुर (राजापार्क) सेवाकेन्द्र द्वारा हाईकोर्ट के बार एसोसिऐशन में आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० पूनम वकीलों के समक्ष प्रवचन कर रही हैं।

यह चित्र कलानौर में लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। वहाँ के चीफ मेडिकल आफिसर प्रदर्शनी का उदघाटन करने के पश्चात् अपनी राय लिख रहें हैं।

यह चित्र जालन्धर सेवाकेन्द्र द्वारा जालन्धर छावनी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। लोकसभा के सदस्य भ्राता राजेन्द्र सिंह स्पैरो प्रदर्शनी का उदघाटन करने के पश्चात ब्र० कु० बहनों के साथ खड़े हैं।

यह चित्र दस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत राजौरी गार्डन सेवा केन्द्र द्वारा विकलांगों के प्रति कार्यक्रम आयोजित किया गया था। यह चित्र उसी अवसर का है। दाईं ओर मंच पर ब्र० कु० रुकमणी जी, शशी जी, व भगत शेर जी बैठे हैं। बाईं ओर कुछ विकलांग बड़े ध्यान पूर्वक बहनों के प्रवचन सुन रहे हैं।

यह चित्र जगन्नाथपुरी में आयोजित शिक्षक शिक्षण शिविर के अवसर का है। मंच पर ब्र० कु० निरुपमा, ब्र० कु० सन्देशी, जी, ब्र० कु० कमलेश तथा कानन आदि बैठी हैं।

यह चित्र हिम्मत नगर में आयोजित आध्यात्मिक मेला के अवसर का है। ब्र० कु० नलिनी प्रवचन कर रही हैं। मंच पर बाईं ओर ब्र० कु० सरला, डिस्ट्रिक्ट एण्ड सैशन जज भ्राता शाह, तथा मेंठ साहब बैठे हैं। ब्र० कु० चंद्रिका एवं ज्योति बहन उनकी दाईं ओर बैठी हैं।

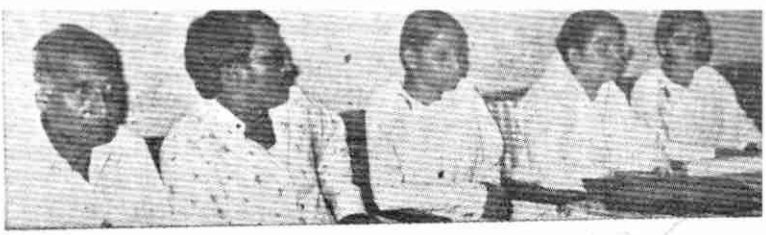

यह चित्र कमला नगर (शक्ति नगर) सेवा केन्द्र द्वारा किंग्स्वे कैंप में स्थित अपंग बच्चों के लाभार्थ आयोजित कार्यक्रम का है। मंच पर ब्र० कु० त्यागी, अपंग संस्था के अध्यक्ष, ब्र० कु० गीता, चक्रधारी तथा सुधा बैठे हैं

मेरा अनुभव

(ब्र० कु० नारायणलाल सिंघल, एडव्होकेट, इंदौर)

बचपन से ही मेरा झुकाव नियमित रुप से देव-पूजन एवं विविध मंदिरों में जाकर देवदर्शन करने की तरफ़ था। पश्चात जैसे-जैसे उमर बढ़ती गई, मैं तुलसीकृत रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीमद् भागवत आदि ग्रन्थों के श्रवण मनन में एवं हवन, कीर्तन, सत्संग आदि में भाग लेने लगा। कोई भी कथा करने वाला पंडित या सत्संग करने वाला संत महात्मा आवे तो उनकी सार्वजनिक कथा या सत्संग की शुरू से आखिर तक की पूरी व्यवस्था करना—यह मेरे जीवन का एक अंग बन गया जो लगभग दस-पन्द्रह वर्ष तक लगातार चलता रहा। इस तरह मैंने हज़ार नहीं तो कम से कम पाँच सात सौ कथा या सत्संग तो अवश्य कराये होंगे। इसी दरम्यान मैंने श्री जगन्नाथ विद्यालय, श्री अग्रवाल कन्या पाठशाला एवं श्री श्रद्धानंद अनाथालय के पदाधिकारी के बतौर भी काम किया और इन्दौर नगर पालिका में छः वर्ष तक पार्षद रहा।

तीर्थ-यात्राएँ कीं परन्तु दुविधा बनी रही

इसके अलावा देवदर्शन, सत्संग आदि के लिये मैंने अनेक तीर्थों का भ्रमण किया जैसे द्वारिका, अयोध्या, बद्रीनाथ, केदारनाथ, तुंगनाथ, गंगोत्री, जमनोत्री, कुरुक्षेत्र, काशी, प्रयाग आदि-आदि। लगभग ३० वर्ष पूर्व जब मैं लगभग ३५ वर्ष का था एवं ऋषिकेष स्वर्गाश्रम में सत्संग के लिये गया था तब वहाँ मैंने अपने जीवन में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया जो अभी तक दृढ़ता से पालन करता आ रहा हूँ।

उपरोक्त सब-कुछ कार्य श्रद्धावश करते हुए भी मेरे मन में सदा यह दुविधा बनी रहती थी कि जब परमपिता परमात्मा एक है तब इतने देवी-देवताओं को पूजने या ध्याने के बजाय क्यों न इनमें से केवल एक ही की (जो परमात्मा का वास्तविक प्रतीक हो उसकी) पूजा, अर्चा या ध्यान किया जावे क्योंकि "एके साधे, सब सधे, सब साधे सब जाय" मैंने वास्तविक जानकारी के लिये कई गुरु भी किये, किसी ने राम की, किसी ने कृष्ण की और किसी ने विष्णु की उपासना का मंत्र बताया जो मैं कुछ समय तक करता रहा लेकिन बाद में मुझे कुछ अरुचि-सी हो जाती क्योंकि मेरी आस्था साकार के बजाय निराकार की तरफ़ अधिक थी। मुझे विश्वास था कि परमात्मा का अनादि एवं वास्तविक रूप तो निराकार ही होना चाहिये।

मंत्र भी लिये परन्तु मन स्थिर नहीं हुआ

इसी दरम्यान मुझे सोहं मंत्र द्वारा निराकार ब्रह्म की उपासना करने का तरीका भी बताया गया जिसका अभ्यास मैंने कुछ समय तक किया लेकिन उस में भी मन के टिकने का कोई साधन नहीं होने से, मन अधिक समय तक स्थिर नहीं हो सका। अंत में मैंने वेदांत, शास्त्र, योग वाशिष्ठ आदि ग्रन्थों का भी बहुत अध्ययन किया जिसमें मेरी आस्था बैठी थी लेकिन समय-समय पर मन में संशय उत्पन्न होता रहा कि आत्मा ही परमात्मा कैसे हो सकती है, मैं स्वयं ही ब्रह्म हूँ और बाकी सब संसार बिल्कुल मिथ्या है, यह कैसे माना जा सकता है?

आखिर वह दिन आया जब मेरे द्वारा अपने जीवन में की गई सब भक्ति का प्रत्यक्षफल अर्थात् स्वयं भगवान की प्राप्ति हुई। कहा भी गया है कि भक्ति जब पूरी हो जाती है तो भगवद् प्राप्ति के रूप में उसका प्रत्यक्ष फल अवश्य मिलता है—जो मुझे आगे बताये मूजब प्राप्त हुआ।

लगभग १० वर्ष पूर्व मेरा परम सौभाग्य उदय हुआ, जबकि संयोगवश मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के इन्दौर सेवाकेन्द्र के सम्पर्क में आया। वहाँ का जो मैंने ज्ञान सुना, राजयोग का अभ्यास किया और वहाँ के नियम देखे तो मैंने वहाँ

वे सब बातें पाई जो मैं अपने जीवन में अपनाना चाहता था या अपना चुका था जैसे केवल एक निराकार शिव से निरंतर योग लगाना, पवित्र एवं सात्त्विक, शाकाहारी भोजन करना, ग्रहस्थ आश्रम में रहते हुए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, पाँच विकारों का जड़मूल से त्याग करना आदि-आदि। वहाँ प्रमुख कार्यकर्त्ता भाई ओमप्रकाशजी, आरती बहिनजो एवं अन्य समर्पित बहिनों का निस्वार्थ त्याग, तपस्या, सेवा एवं नम्रतापूर्ण व्यवहार देखकर मुझे अपना जीवन भी वैसा ही बनाने में काफ़ी प्रेरणा मिली और मिल रही है।

आगे, जैसे-जैसे मैं इस ज्ञान की गहराई में गया, मुझे यह निश्चय होता गया कि यहाँ जो ज्ञान दिया जा रहा है वह किसी मनुष्य के मस्तिष्क की उपज नहीं हैं, बल्कि स्वयं परमपिता परमात्मा शिव इस पृथ्वी पर दिव्य रूप से अवतरित होकर मानव कल्याण के लिये यह ज्ञान दे रहे हैं। इस तरह स्वयं परमात्मा का सानिध्य प्राप्त करके, स्वयं उनके द्वारा दिये गये ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा प्राप्त करके एवं उनसे बुद्धि द्वारा वार्तालाप करके, मैं अपने जीवन को कितना कृत कृत्य समझ रहा हूँ और मुझे अपने जीवन में कितनी खुशी, शाँति एवं संतोष की प्राप्ति हो रही है—इसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। अपने निजी अनुभव के आधार पर केवल इतनी अपील कर सकता हूँ कि प्रत्येक मनुष्य थोड़ा पुरुषार्थ करके स्वयं इन सबका अनुभव करने का प्रयत्न करे और अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करे।

●

गीता के भगवान

ब्र० कु० रामऋषि

भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

कर्म-क्षेत्र के धर्म-क्षेत्र में सेनाएं एकत्र हैं
पाण्डव भी हैं, कौरव भी हैं, यादव-मूसल-अस्त्र हैं
सत्य पक्ष के, असत् पक्ष के पुनः हुए आह्वान हैं।
भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

मामेकम् के महामंत्र के मीठे-मीठे मर्म को
सुना, पाण्डवों ने पहचाना अपने श्रेष्ठ स्वधर्म को
श्रेयस्-पथ पर अर्जुन का रथ फिर करते गतिमान हैं।
भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

कौरव तो स्वभाव से, प्यारे प्रभु के अति विपरीत हैं
उनको तो ऐश्वर्य-भोग से, मद्य-द्यूत से प्रीति है
इनको पूर्ण पराजय का ही रचते गुह्य विधान हैं।
भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

यादव अहंकार के पुतले, बड़ा नशा है बुद्धि का
रचते हैं षड्यंत्र एटमी हथियारों के युद्ध का
इन्हें पता है निकट आ चुका अब इनका अवसान है।
भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

जन्मों के सारे रहस्य को कल्प-कल्प मिस खोलते
अर्जुन के रथ में बैठे भगवान स्वयं फिर बोलते—
'आत्म-युद्ध में सखे ! तुम्हारा ही होना जय-गान है।'
भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

नयी सृष्टि की नव रचना की रची जा रही युक्तियाँ
आये शिव भगवान साथ में प्रकट हुईं शिव-शक्तियाँ
शुचि देवत्व-कला में भारत बनता फिर महिमान है।
भारत में फिर आज पधारे गीता के भगवान हैं।

"तूफान ही तोफा लाते हैं"

(ले० ब्र० कु० गायत्री, अमृतसर)

आज संसार का हर प्राणी बच्चा-बूढ़ा-जवान, अमीर-गरीब, तोफ़ा अर्थात् इनाम, मान और शान के रूप में प्राप्त करने की आशा को सामने रख कर अपनी जीवन की मंजिल पर दौड़ता जा रहा है। वह तोफ़ा प्राप्त करने के लालच में कठिन-से-कठिन कार्य भी कर लेता है। माँ-बाप भी छोटे बच्चों को किसी वस्तु का लालच देकर कई कार्य करा लेते हैं लेकिन इस जीवन में जो समस्यायें रूपी तूफ़ान आते हैं उससे भी तोफ़ा प्राप्त होता है—इस बात पर किसी का भी ध्यान नहीं जिस कारण मनुष्य उससे मुख मोड़ता है। जब वह परम-पिता-परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ता है तो बन्धनों को तोड़ता है और तोफ़ा प्राप्त कर सकता है।

तूफ़ान शब्द ही बड़ा संघर्षात्मक है और संघर्ष ही जीवन को बलवान बनाने का आधार है। तूफ़ान नहीं तो महानता नहीं परन्तु फिर भी न जाने क्यों तूफ़ान का नाम सुनकर ही मानव भयभीत हो जाता है। वह स्वयं को असमर्थ-सा महसूस करता है। हम यहाँ सागर में आने वाले तूफानों की चर्चा नहीं कर रहे हैं परन्तु उससे भी भयानक ज्ञान-योग के मार्ग में आने वाले तूफ़ानों का वर्णन कर रहे हैं। ज्ञान-योग का मार्ग साँसारिक व्यक्तियों के लिए है, जँगल में रहने वालों के लिए नहीं है। योग, कर्म-योग है और कर्म संसार से सम्बन्धित है। ज्ञान का माप दण्ड भी कर्मों से अथवा व्यवहारिक जीवन से होता है। इस-लिए ज्ञान-योग के अनुयायियों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि जीवन है ही तूफ़ानों का समूह। हम जंगल में नहीं रहते जो हमें तूफ़ान न आयें, हम तो माया को चुनौती देकर चलने वाले राजयोगी तपस्वी हैं! जीवन में तूफ़ान तो आयेंगे ही, इसलिए भयभीत न हों, कि तूफ़ान आयेंगे तो क्या होगा? हमें तो निर्भय होकर उन राहों पर चलना है जहाँ कदम-२ पर तूफान हैं, संघर्ष है क्योंकि हम नवीन पथ के राही बने हैं।

तूफ़ान क्या होते हैं?

सत्य मार्ग में बाधाएँ आना ही तूफ़ान हैं। जहाँ सत्यता है वहाँ बाधाएँ हैं। असत्यता में रुकावटें कहाँ? पुरानी सड़ी-गली बातों पर चलने में बाधाएँ कहाँ? तूफ़ान तो ज्वार-भाटे की तरह अस्थाई हैं, स्थाई नहीं। तूफ़ान तो आते हैं और चले जाते हैं। आप भी उनके साथ चलना सीखो। खड़े मत हो जाओ।

इस भवसागर में ओ राही। लहरें तो हज़ारों आयेंगी।
गिरा-गिरा कर भी वो तुमको, शिक्षा देकर जायेंगी॥

लहरों से घबराना नहीं है बल्कि निश्चल होकर के चलना है। तूफानों से संघर्ष करो, आप तो तूफ़ानों से महान हो, श्रेष्ठ हो। तूफ़ान आपको रोक नहीं सकेंगे। तूफ़ानों का सामना करना महावीरता है। एक बलवान योद्धा से बलवान ही टकरायेगा, कम-ज़ोर नहीं। इसलिए कभी भी यह हीन भावना अपने मन में न आने दो कि शायद हम कमज़ोर हैं, इसलिए हमारे सामने तूफ़ान आते हैं।

तूफ़ान आते देख स्वयं की शक्ति को मत भूल जाओ, सदैव सोचो कि तूफ़ान आये हैं हमें आगे बढ़ाने के लिए, हमारी शक्ति को प्रख्यात करने के लिए, हमें बलवान बनाने के लिए! इसलिए तूफ़ानों से डरो नहीं बल्कि तूफ़ानों से लड़कर जीना ही स्वधर्म है।

तूफ़ान ही तो साथी बनकर, तुमको बलवान बनायेंगे।
अन्तिम पेपर में वो तेरा, सच्चा साथ निभायेंगे॥
मित्र बना लो तूफ़ानों को, सहयोगी बनकर चलना है।

आपको डर किसका? क्या हार का? हार-जीत तो इस संसार का खेल है। एक बार की हार बार-बार विजयी बनने के लिए, अनुभवी बनायेगी। इस-लिए हार होने पर भी आप हताश, निराश न होना। बाबा ने आपकी आशाओं के दीपक पहले से ही जला दिये हैं। जिस पुरुषार्थी के आगे कभी तूफ़ान नहीं

आते, वह कमज़ोर ही रह जाता है और अन्तिम परीक्षाओं में असफल हो सकता है। इसलिए तूफ़ान आपके भाग्य का सितारा चमकाने वाले हैं और मानव को निर्बल से बलवान बनाने वाले हैं। आज तक जितने भी महान पुरुष संसार में हुए हैं तूफ़ानों ने ही उन्हें प्रत्यक्ष किया है इसलिए तूफ़ानों को देख अलबेले-पन की चादर डाल सोना नहीं है बल्कि तूफ़ानों का स्वागत करो, हँसते-हँसते उन्हें पार कर जाओ। तूफ़ान है भी क्या ? एक खेल ही तो है।

चतुर पुरुषार्थी कौन ?

चतुर नाविक वही है जो तूफ़ानों से अपनी नाव को सुरक्षा पूर्वक निकालकर उसे पार ले जाये। ज्ञान-योग मार्ग में भी चतुर पुरुषार्थी वह है जो तूफ़ानों के इस भव-सागर से अपनी जीवन रूपी नाव को सरलता और सफलता से लेता चला जाये। जब भी आपकी नाव तूफ़ानों के घेरे में आ जाये तो अपनी तकदीर को दोष देने न लग जाओ। ज़रा धैर्यता से काम लो। तूफ़ानों के समय अपनी नाव को ऊपर उठा दो अर्थात् स्वयं को विशाल, बेहद स्वरूप में स्थित कर दो। तूफ़ान बड़ी ही सरलता से तोफ़े के रूप में परिवर्तित हो जायेंगे। यह कभी न भूलें कि कल्प-कल्प हमने इन तूफ़ानों पर विजय प्राप्त की है, अभी तो हमारे साथ स्वयं सवशक्तिवान भगवान हैं, अपने साथी को भूल न जाओ।

तूफ़ानों से मत झुकना, तुमको तो विश्व झुकाना है।
ठुकरा करके मान-शान को, आगे बढ़ते जाना है॥
तोफ़े लेकर तूफ़ानों से, वितरण करते चलना है।

तूफ़ान तो आपके सच्चे शिक्षक हैं। हरेक तूफ़ान आपको कुछ सिखाना चाहता है। वह आपका विरोधी नहीं है। तूफ़ान आने पर स्वयं तूफ़ान का स्वरूप न बन जाये, निराश न हो जाये बल्कि उससे कुछ सीखकर आगे बढ़ो। स्वयं की मग्न अवस्था में जो शक्ति है वो तूफ़ानों के संसार में रहते हुए भी हमें सुरक्षित रखती है। ऐसा ही महसूस होता है कि तूफ़ान हमारे ऊपर से ही गुज़र रहे हैं परन्तु हमें छूने का साहस उनमें नहीं है। इसलिए संसार में रहकर अगर तूफ़ानों की आँच से बचना चाहते हो तो ईश्वरीय लगन में मग्न हो जाओ। शिव बाबा की याद में स्वयं को समर्पित कर दें तो आपकी जीवन नैया को तूफ़ानों से वह पार लगाने वाला है। आप हर कदम उसकी आज्ञानुसार उठाओ तो तूफ़ान समाप्त हो जायेंगे। दूसरे के मुख से अपनी निन्दा सुनकर आपके मन में संकल्पों का ज्वार उठता है लेकिन यह तो मनुष्य की प्रकृति है दूसरों में दोष निकालना और दूसरों को द्वेष दृष्टि से देखना। आप उनकी चिन्ता न करो। यह आपको लक्ष्य पर चढ़ने से रोकते नहीं बल्कि फोर्स भरने का काम करते हैं। तुम अपने लक्ष्य पर अडोल रहो, लक्ष्य को ढ़ीला न करें, लक्ष्य को भूलने से ही कमज़ोरी आती है। लक्ष्य की स्थिरता शक्ति का आभास करायेगी। आप अपने सत्य पथ पर निश्चिन्तता से चलते रहो। सत्य पथ के पथिक का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। अगर तनिक भी असत्यता है तो उसे ठीक कर लें अन्यथा वही आगे अड़चन का रूप बन जायेगी और आपको रोकने लगेगी। सदा स्वयं से यह प्रश्न पूछते रहो कि हमने यह ज्ञान किस लिए लिया है—श्रेष्ट स्थिति को प्राप्त करने के लिए अर्थात् नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनने के लिए। तो ऐसे ऊँच लक्ष्य पर पहुँचने के लिए तूफानों का भी पूरा सामना करना ही पड़ेगा। तूफानों से पार होने की दवा है—ईश्वर-स्मरण। ईश्वर के नाम की नाव पर चढ़कर ही भवसागर से पार हो जायेंगे।

जो जहाज़ को डुबो दे उसे तूफ़ान कहते हैं।
जो तूफ़ान को डुबो दे उसे इन्सान कहते हैं॥

एक भेंट वार्ता

ब्रह्माकुमार विनय, पाटन (गुजरात)

इस बार मेरी मधुबन की यात्रा में मधुबन निवासी आत्मप्रकाश भाई से वार्त्तालाप हुआ। आत्मप्रकाश जी ने एम० एस० सी०(एग्रीकल्चर) तक शिक्षा प्राप्त की और युनिवर्सिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। परन्तु कुछ ही समय के बाद उन्होंने अपना जीवन शिव बाबा को समर्पण कर दिया और मधुबन में यज्ञ-सेवार्थ रहने लगे। उनका त्याग और उनकी तपस्या देख कर मेरा उनकी तरफ़ झुकाव होना स्वाभाविक ही था। मैंने उनसे कुछ प्रश्न पूछे। उनका उत्तर जो उन्होंने दिया उसका संक्षिप्त विवरण पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत करूँगा।

प्रश्न—आपको कौन सी बात अच्छी लगी कि आपने ये मार्ग अपनाया ?

उत्तर—आत्मप्रकाशजो ने कहा—

जब मैं एम० एस० सी० (एग्रीकल्चर) अन्तिम वर्ष में था, मुझे इस ज्ञान का परिचय मिला। उससे पूर्व मेरा लक्ष्य आध्यात्मिक मार्ग पर चलने का नहीं था। परन्तु कुछ ही दिनों में यहाँ मुझे ईश्वरीय मिलन का और एक अजीबसी शान्ति का अनुभव हुआ और मैंने देखा कि यहाँ कुछ भी आडम्र या भौतिकता नहीं थी, इस लिए मैंने ये मार्ग अपना लिया।

प्रश्न—आपने ब्रह्मचर्य को पसन्द क्यों किया ?

उत्तर—जब मुझे ईश्वरीय मिलन का आनन्द प्राप्त हुआ तो मैंने सोचा इतनी बड़ी प्राप्ति के लिए पवित्र रहना कोई बड़ा त्याग नहीं है। भगवान से मिलने के लिए प्राचीन काल से कितने प्रयत्न जिज्ञासुओं ने किये, और यहाँ इतनी बड़ी प्राप्ति अगर इतनी सहज रीति से हो सकतीहै तो ब्रह्मचर्य में रहना कठिन क्यों। पर मुख्य बात यह है बन्धु, कि मुझे तो ऐसा लगा कि पवित्र रहने की शक्ति भी मुझे शिव बाबा से वरदान रूप में मिली।

प्रश्न—क्या एम० एस० सी० में सर्व प्रथम स्थान लेने में आपको राज योग की कोई मदद मिली ?

उत्तर—हाँ, बी० एस० सी० में मैंने सामान्य प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी। परन्तु जब मैंने ईश्वरीय ज्ञान लिया तो सर्व प्रथम तो अमृतबेले जल्दी उठने लगा, इससे बुद्धि का बहुत विकास हुआ। दूसरा ज्ञान से मुझे आत्म-विश्वास बहुत प्राप्त हुआ, उससे मेरे कदम मेरे लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ने लगे। मन में निर्भयता आई। और तीसरी मुख्य बात कि योगाभ्यस द्वारा जो एकाग्रता की शक्ति मुझे प्राप्त हुई उससे मुझे बहुत कम मेहनत से सफलता मिली और ध्यान देने योग्य बात यह है कि मैं इससे पूर्व जो समय इधर उधर, घूमने फिरने या सिनेमा में बिताता था, मेरा वह समय बच गया। ज्ञान के बाद मेरा जीवन अधिक संयमित हो गया। इन्हीं कारणों से मैंने एम० एस० सी० में युनिवर्सिटी में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रश्न—आप इतने शिक्षित होने के वाद भी समर्पित क्यों हुए ?

उत्तर—ऐसे तो शिक्षण काल में औरों की तरह मैं भी अपने जीवन की अनेक झाँकियाँ बनाया करता था, एम० एस० सी० के बाद एक शिक्षक के रूप में कार्य भी किया। परन्तु मैंने देखा कि साँसारिक उपलब्धियाँ, मनुष्य के जीवन को संतोष नहीं दे सकती। मनुष्य उलझता जा रहा है। मैंने देखा कि बड़े-बड़े प्रोफेसर, ऑफिसर अपनी ज़िन्दगी से परेशान हैं। उनकी ज़िन्दगी में कोई आदर्श और स्थिरता नहीं है।

इसके विपरीत ज्ञान और योग संपन्न जीवन तो श्रेष्ठ है ही, परन्तु इस विनाशी जीवन को प्रत्यक्ष भगवान पर समर्पित करके उसके मन को जीतने का ये सुनहरा अवसर हमें प्राप्त हुआ है, क्यों न हम इसका लाभ उठायें। सम्मुख भगवान बार-बार हमें नहीं मिलेगा। और समर्पित जीवन में निश्चिन्त और सन्तुष्ट जीवन का ईश्वरीय सुख लेने के लिए मैंने भौतिक उपलब्धियों को लात मार कर यह सर्वश्रेष्ठ

भाग्य प्राप्त किया।

मुझे उमंग बढ़ गया। कि जैसे मैंने उस सांसारिक विश्व-विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, वैसे ही अब मैं ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में भी ऊँचा स्थान प्राप्त करूँ।

प्रश्न—आपको आपके माता-पिता ने छुट्टी कैसे दी ? क्या उनको आपसे कुछ आशायँ नहीं थीं ? क्या आप नहीं समझते कि समझदार व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह अपने माँ-बाप की सेवा करे ?

उत्तर—हाँ, माता-पिता की सेवा करना तो मनुष्य का परमधर्म है ही। परन्तु मेरे माँ-बाप इस ज्ञान-मार्ग पर चलने के कारण मुझसे अधिक समझदार थे। उन्होंने कहा—बेटा, तुम अपने इस अमूल्य जीवन को हमारी सेवा में मत लगाओ, विश्व-पिता परमपिता शिव, जो जगत का मात-पिता है उसकी सेवा कर, इस विश्व को पावन बनाने में उसका सहयोगी बनो। उन्होंने कहा कि तू एक परिवार की सेवा करने की बजाए अनेक परिवारों की सेवा कर।

यद्यपि पहले उन्हें मुझसे अनेक इच्छाएँ थीं, पुत्र सुख देखने की। वैसे तो आधुनिक काल में पुत्र सुख किसे प्राप्त है ! परन्तु जब उन्हें ईश्वरीय सुख मिला तो वो इसी में पुत्र सुख अनुभव करने लगे कि हमारा पुत्र अनेकों को ईश्वरीय सुख का मार्ग दिखाए और उहोंने अपने आर्शीवाद सहित सहर्ष मुझे छुट्टी दी।

प्रश्न—मधुबन में रहकर आपने किचन (Kitchen) की सेवा ही क्यों की, आप को तो ऑफिस में सुख पूर्वक सेवा करनी चाहिए ?

उत्तर—जब शिवबाबा पर जीवन समर्पित कर दिया फिर ये सोचना नहीं होता कि मैं ये सेवा करूँ या न करूँ। परन्तु फिर भी भोजन आदि बनाने की सेवा में मैंने इसलिए रुचि ली क्योंकि बाबा ने कई बार ब्रह्मा भोजन का परम महत्त्व बताया। ज्ञान देकर हम किसी आत्मा को पावन नहीं बना सकते केवल उसे मार्ग दिखा सकते हैं, परन्तु योग युक्त भोजन खिलाकर हम किसी के विचारों को शुद्धकर सकते हैं। स्थापना के कार्य में इसका परम महत्त्व है, इसलिए मैंने इस कार्य की प्रधानता दी।

प्रश्न—क्या आपको अभिमान नहीं आता कि **मैं इतना पढ़ा लिखा होकर ये छोटा काम कर रहा,** हूं, दूसरे मुझे छोटी दृष्टि से देखते होंगे, अगर मैं भाषण करूँ तो मेरा नाम हो जाए ?

उत्तर—मैं सदा इन विचारों का व्यक्ति रहा हूं कि चुनौतियों से लड़ा जाए, संघर्षमय जीवन से पीछे न हटा जाए। यह अपना-अपना दृष्टि कोण है कि कौन किस प्रकार की सेवा को महान समझता है। जैसे-जैसे मैंने ज्ञान की गहरई से देखा—मुझे यह स्पष्ट हो गया कि ज्ञान-मार्ग में आगे कौन है। किसी कर्म को करने से मनुष्य छोटा या बड़ा नहीं होता। आध्यात्मिक क्षेत्र में छोटे-बड़े का माप दण्ड उसकी सूक्ष्म स्थिति से हो किया जा सकता है न कि उसकी बाह्य दृष्टि कोण से यानि भाषण या किसी बड़े पद से। अगर भाषण करने वाले या ऊँच पदासीन आत्माएँ योग और पवित्रता आदि में श्रेष्ठ नहीं हैं तो वास्तव में उनसे महान वो हैं जो साधारण कार्य करते हैं परन्तु ऊँची स्थिति को प्राप्त हैं—ऐसा मैंने बाबा के ज्ञान द्वारा आँका है।

तो क्योंकि मैं यह सेवा स्वान्तः सुखायः करता हूं। सेवा के साथ-साथ हमारा लक्ष्य दूसरों तक पवित्र प्रकम्पन (Vibrations) पहुँचाना होता है।

उत्तर—जिन्होंने बाबा द्वारा दिये गये ज्ञान को गुह्यता से जाना है, वे कभी ऐसा नहीं कह सकते। अपनी अव्यक्त वाणियों में बाबा ने बार-बार स्पष्ट किया है कि विश्व महाराजन कौन बनेंगे, अथवा नम्बरवन में कौन आयेंगे। बाबा ने कभी यह नहीं कहा है कि जो भाषण करते हैं या कई सेन्टरों के इन्चार्ज हैं, वे ही विश्व महाराजन बनेंगे ये केवल बाह्य दृष्टि से देखने वालों के व कर्म-गति की गुहयता को न जानने वालों के ही विचार हो सकते हैं। बाबा के ये महा वाक्य स्मरणीय हैं कि **जीवन की याद में सदा रहते हैं, जो सम्पूर्ण आत्माएँ हैं या जिनमें अष्ट शक्तियाँ हैं, वही अष्ट रत्न हैं ! बाबा ने बार बार यही स्पष्ट किया है कि जो स्वयं की मन बुद्धि सहित सर्व कर्मेन्द्रिययों पर राज्य करना जानते हैं, वोही विश्व पर भी राज्य कर सकते हैं।** तो इस ज्ञान की गुह्यता को जानने से मुझे कभी कोई व्यर्थ संकल्प नहीं चलते।

क्या आप कोई और भी सेवा करते हैं ?

उत्तर—हाँ इसके अतिक्ति लेख लिखना, सांस्कृ-

तिक कार्यक्रमों में भाग लेना, बाहर से आये हुए भाई बहनों की ज्ञान से सेवा करना और साथ मधुबन के शान्त वातावरण से शान्ति के प्रकम्पन (Vibrations) चारों ओर फैलाने की सेवा भी करते हैं। मैं ये समझता हूँ कि मधुबन जैसी पावन भूमि पर रहते हुए अपनी स्थिति को श्रेष्ट व योग युक्त रखना भी बड़ी सेवा है ताकि दूसरे स्वतः ही हमसे कुछ प्रेरणा ले सकें। मुझे सदा ख़्याल रहता है कि मैं कभी भी किसी के लिए समस्या न बनूं, बल्कि मेरा जीवन समस्या निवारक हो, यह भी सेवा का सूक्ष्म स्वरूप है।

प्रश्न—क्या आप को समर्पित जीवन बन्धन नहीं लगता ?

उत्तर—सर्व को बन्धन मुक्त बनाने वाले बन्धन महसूस कैसे करेंगे। बन्धु, बन्धन की ज़ंजीरों में मनुष्य स्वयं ही स्वयं को बाँधता है। हम तो पूर्ण स्वतन्त्र हैं। हम किसी के ऊपर बन्धन रखते हैं न कोई हमारे ऊपर। अगर हम समर्पित होकर ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करते हुए यथार्थ रीति से अपनी राहों पर चलते रहते हैं तो जीवन आदर्श बन जाता है। देखा गया है कि मन के बन्धन ही आत्मा को बाँधते हैं। अगर मन माया से स्वतन्त्र है तो उसे कोई बाँध नहीं सकता।

प्रश्न—क्या आप यह सेवा करते-करते राजयोगी बन जायेंगे, अपने लक्ष्य पर पहुँच जायेंगे ?

उत्तर—हाँ जैसे ही मैं किचन सेवा में आया, मुझे लगा जो योग मुझे कठिन लगता था, अब ऐसा नहीं है। भोलेनाथ के भण्डारे को तो मानो बाबा ने वरदान दे दिया है। क्योंकि ब्रह्मा भोजन बनाते हमें यह ध्यान रहता है कि अगर मेरा एक भी संकल्प चलेगा तो मेरा ही नहीं, अनेकों के संकल्प चलेंगे। इसलिए बुद्धि सहज ही स्थिर हो जाती है।

मैं अपने जीवन में यह ध्यान रखता हूँ कि केवल अपने लक्ष्य की ओर ही देखा जाए और अन्य कहीं भी नहीं। मैं बार-बार स्वयं से पूछता हूँ कि आत्म ! तू यहाँ आया क्यों है ? क्या इधर-उधर की बातों में समय गँवाने ? नहीं। क्या केवल खाने-पीने और थोड़ी-बहुत सेवा करने ? नहीं। तो जिस लक्ष्य को लेकर तू आया है, बस वही कर। ये दृढ़ता मेरे मन को कहीं भी भटकने नहीं देती।

प्रश्न—क्या आप स्वयं से सन्तुष्ट हैं ?

उत्तर—हाँ, मन गवाही देता है कि आत्मा बहुत कुछ पा रही है और शीघ्र ही लक्ष्य को पालेगी। ईश्वरीय सेवा करते अव्यक्त बाबा का प्यार मिलता है, आत्मा नाच उठती है। जीवन के अभाव समाप्त होते जा रहे हैं, दृढ़ता बढ़ रही है। पिछले ३ वर्षों में ही मैंने बहुत कुछ पाया। आत्मा इन ईश्वरीय अनुभूतियों को पाकर सन्तुष्ट हो गई है।

दीदी दादी जी के प्रति

(ले० ब्र० कु० मीरा, फिरोज़ाबाद)

सौम्य शान्ति की भव्य मूर्ति तुम
बच्चों के हृदय की उद्गार
बहन और भाइयों से
करती सदा एक सा प्यार।

सत्य और शान्ति के पथ पर चलती
दुर्गा देवी हो साक्षात्
अटल शिला-सी तुम स्थित हो
बनकर रूहानी होस्पीटल की आधार

शिक्षा के प्रति उत्तरदायी हो
पालक-पोषक जननी के समान
हृदय-कमल की पुष्प बनकर
करती तुम सबका कल्याण।

सबके मन में बसी हुई हो
बनकर भव्य मूर्तिमान
रूहानी स्कूल यह पुष्प वाटिका
जिसमें लिखते पुष्प अपार।

तुम दो इसकी मालिन हो
तुमको याद स्वीकार बारम्बार ॥

"परफेक्ट बनकर रेस्पेक्ट पाने का सहज साधन"

ले० ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

Infact बाबा के इस Act ने मेरे दिल पर गहरा Effect किया कि बाबा ने कल्पपूर्व की तरह Exact समय पर Direct परमधाम से आकर, हम बच्चों को ज्ञान और योग की Subject पढ़ाने, हमारी Intellect को दिव्य बनाने तथा विकारों को Eject कर सच्चा योगी जीवन जीने का Tact सिखाने के लिए दुनिया की अनेक आत्माओं में से हमको Select किया। अब बाबा कहे, तुम बच्चे हो विश्व के नव-निर्माण का Contract उठाने वाले ईश्वरीय रूहानी Architect, इसलिये दिल्ली महायज्ञ जैसे विहंग मार्ग की सेवा के बड़े-बड़े Project बनाकर हर Sect की आत्माओं से Contact कर बाप का परिचय दो। दो युगों तक रावण ने तुमको Misdirect किया, अब भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ किये गये Indirect दान-पुण्य आदि को Reject कर Direct बाबा द्वारा मिले Correct एवं Abstract ज्ञान की मुख्य प्वाइंटस Collect कर अशान्त, दु खी एवं भिखारी आत्माओं को दान करते रहो। सदैव अपनी Aim-object को बुद्धि में रखो तुमको इस पुरानी दुनिया के किसी भी व्यक्ति, वस्तु या वैभव की तरफ Attract न हो बुद्धि को एक बाप से Connect करना है तभी ही माया के Defect से बचकर Perfect बन वैजयन्ती माला में Elect हो पूरे विश्व द्वारा Respect पाने के अधिकारी बनेंगे।

—: ० :—

(गीत)

तुम हो महान

योगीराज, मधुबन, आबू

तुम हो महान, सर्व शक्ति वान, तुम करते मानव-उत्थान।
तेरी याद में बीते जीवन, मन का मेरे यही अरमान।
तुम ही भुलाते याद पुरानी, तुम्ही दिखाते राह रूहानी,
तुम ही सुनाते आकर हमको, अमर पद की सत्य कहानी,
तुमको अर्पण है ये जीवन, भेंट करो स्वीकार,
तेरी याद में·····

तुम रूहों के प्राण हो बाबा, तुम निर्बल के सहारे,
जो अपना सब तज देते, वो लगते हैं तुमको प्यारे,
श्वाँस-श्वाँस में याद तुम्हारी, देती है मुझको वरदान
तुम हो महान·····

तुम आकर दिल हल्का करते, तुम ही मन के साज सजाते,
गर्म हवा के झोकों को तुम, शक्ति देकर शीतल करते,
प्रेम छिड़कते उन बच्चों पर, देते हैं जो अमृत दान,
तुम हो महान·· ···

तुम्ही सखा बन साथ निभाते, प्रियतम बन कर हाथ बढ़ाते,
बीच भँवर में फँसी नाव को, तुम ही आकर पार लगाते,
पग पग पर गुण गान करें, जो पाते हैं तेरा सत् ज्ञान,
तेरी याद में·····

यह चित्र कानपुर (किदवई नगर) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित योग शिविर का है। वहाँ की काँग्रेस (आई) के महामंत्री भ्राता प्रेमचन्द अग्निहोत्री टेप काटकर उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र (अमरेली) में आयोजित 'सहज राजयोग प्रदर्शनी' अवसर पर पधारे हुए व्यापारी भ्राता अरविंद भाई झवेरी ब्र० कु० गीता बहन ईश्वरीय संदेश दे रही हैं।

यह चित्र दार्जिलिंग के निकट पन्दाम बस्ती में आयोजित कार्यक्रम का है। ब्र० कु० केसर गीत सुना रही है साथ में ब्र० कु० सुदर्शन बैठी है।

यह चित्र कुम्भ (सिंहास्थ)-८०, उज्जैन में आयोजित नव-विश्व अध्यात्मिक मेले का अवलोकन करते हुए अमरकंटक योगीराज दादा श्री महंत रामकृष्ण दास जी को ब्र० कु० किरण चिंत्र की व्याख्या दे रही हैं।

यह चित्र वर्धा सेवा केन्द्र की ओर से आर्वी में। विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इसका उद्-घाटन उपविभागीय अधि-कारी श्री डी० डी० राठोड़ ने किया। साथ में ब्र० कु० नलिनी, जनार्दन भाई, नंदू, तथा प्रभा बहन बैठी हैं।

ऊपर का चित्र शाहबाद (गुलबर्गा) द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का है। ब्र० कु० विजया वहाँ के विधान सभा के सदस्य भ्राता शान्ता मलप्पा को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

यह चित्र बडौदा सेवा केन्द्र द्वारा डवोई ग्राम में आयोजित प्रदर्शनी का है। तालुका पंचायत के प्रमुख भ्राता उमाकान्त जोशी टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

ऊपर का चित्र कासगंज सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित प्रदर्शनी का है। वहाँ के बी० डी० ओ० टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

यह चित्र लखनऊ (पेपर मिल कालौनी) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित कुछेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों का योग शिविर का है। वहाँ की भारतीय विज्ञान ऐकेडमी के जनरल सेक्रेटरी दिखाई दे रहे हैं।

नीचे का चित्र भोपाल में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का है। भारत हैवी ईलैक्ट्रीकल्स के जनरल मैनेजर बीच में बैठे हैं।

ऊपर का चित्र पन्दाम वस्ती (दार्जिलिंग) में आयोजित प्रदर्शनी एवं प्रवचनों के कार्यक्रम का है। ब्रह्मकुमारी बहनों का एक ग्रुप दिखाई दे रहा है।

यह चित्र रांची सेवा केन्द्र द्वारा गुरुनानक पोलियों सेन्टर में आयोजित कार्यक्रम का है। ब्र० कु० रानी प्रवचन कर रही हैं।

इस चित्र में दादी प्रकाशमणी जी (मुख्य प्रशासिका) केरल की राज्यपाल बहन ज्योति वैणकैटाचैलम को ईश्वरीय सन्देश सुना रही है। साथ में ब्र० कु० हृदय पुष्पा जी खड़ी है।

यह चित्र राँची सेवा केन्द्र द्वारा दस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत वहाँ के पोलियों सैन्टर में आयोजित कार्यक्रम का है। ब्र० कु० रानी एक विकलांग बच्ची को ज्ञान सुना रही हैं।

यह चित्र में आयोजित प्रदर्शनी के अवसर का है। वहाँ के

प्रदर्शनी के अवसर का है। ब्र० कु० निर्मला जी टेप काटकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रही है। साथ में वहाँ के बहन भाई खड़े हैं।

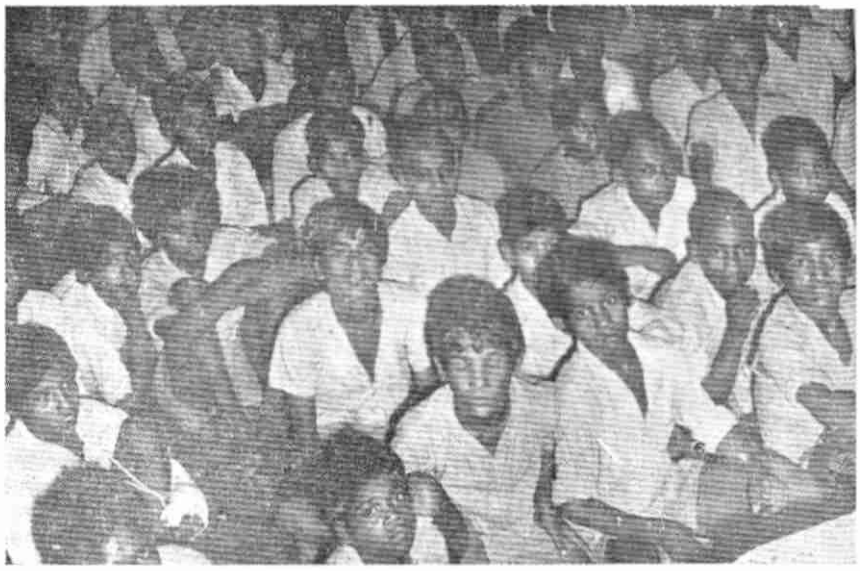

यह चित्र कमला नगर (शक्ति नगर) सेवा केन्द्र द्वारा किंग्स्वे कैम्प में अपंग बच्चों के लाभार्थ कार्यक्रम का है। चित्र में विकलांग बच्चे बड़े ध्यानपूर्वक कार्यक्रम को देख रहे हैं।

इस चित्र में जगन्नाथपुरी में आयोजित कन्याओं की भट्ठी में कन्याएँ आत्म-स्मृति का तिलक लगाने के बाद योग में बैठी है।

यह चित्र अम्बा जी (गुजरात) में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। ब्र० कु० सरलाजी

एक नया अभियान

ब्र० कु० रामऋषि

हम योधे हैं, हम सैनिक हैं एक नये अभियान के।
कमल पुष्प की सहज अवस्था अपनी सच्ची शक्ति है
मनोविकारों पर जय पाने की यह मीठी युक्ति है
इससे हमले रुक जाते हैं काम-क्रोध शैतान के।
हम योधे हैं, हम सैनिक हैं –।

सत्य धर्म की गदा हमारी इसमें शक्ति अपार है
हमको छलने वाली दुष्कर माया जाती हार है
स्वप्न सत्य होने वाले हैं नूतन स्वर्ण विहान के।
हम योधे हैं, हम सैनिक हैं –।

हम हैं आत्मनिष्ठ, परमात्मा स्वयं हमारे संग हैं
अपना चक्र स्वदर्शन का यह अनुपम-अद्भुत खड्ग है
पाप-शाप करने वाले हैं धरती पर इन्सान के
हम योधे हैं, हम सैनिक हैं—।

राजयोगमय सत्य ज्ञान का अपना सुन्दर शंख है
मन के पंछी ने पाये फिर ये दो नव-नव पंख हैं
उद्घोषित हैं महावाक्य फिर सच्चे गीता ज्ञान के।
हम योधे हैं, हम सैनिक हैं—।

बेशक कर्मक्षेत्र पर हावी आज पाँच शैतान हैं
किन्तु हमें दे रहे सहारा प्यारे शिव भगवान हैं
युद्ध विकारों के विरुद्ध यह, और देह-अभिमान के।
दिन आये दैवी स्वराज्य के मंगलमय वरदान के।
हम योधे हैं, हम सैनिक हैं एक नये अभिमान के।

—: ० :—

सूर्यवंशी देवता बनने के लिए धारणाएं

ब्रह्माकुमारी सीता, अमरावती

१. पवित्रता
२. अन्तर्मुखता
३. सहनशीलता
४. हर्षितमुखता
५. सन्तुष्टता
६. निर्भयता
७. सरलता
८. निर्माणता
९. गंभीरता
१०. अहिंसा
११. अडोलता
१२. निरहंकारिता
१३. अटल निश्चय
१४. परोपकारी
१५. स्वचिन्तन
१६, अन्दर-बाहर से सफ़ाई
१७. शुभचिन्तन
१८. मधुरता
१९. समय का कदर करना
२०. क्लास की कदर करना
२१. फ़रिश्ता होकर चलना
२२. निन्दा स्तुति में समान रहना
२३. ईर्ष्या भाव न रखना
२४. किसी से बहस न करना
२५. दोनों के बीच में न बोलना
२६. सम्पूर्ण ब्रह्मचारी हो चलना
२७. विचार-सागर मंथन करना
२८. ऊँचे आवाज से न बोलना
२९. युक्तियुक्त, ज्ञानयुक्त ओर योगायुक्त हो रहना
३०. मुरली सुनने या पढ़ने में कभी नाग़ा न करना
३१. एक दूसरे को सहयोग देना
३२. संगठन बनाकर चलना
३३. दैवी परिवार से अति स्नेह रखना
३४. दिल की बात 'दिलवर' से कहना

३५. यज्ञ की सेवा बड़ी प्यार से करना
३६. क्लास में योग की कदर करना
३७. किसी से कोई काम रौब से नहीं कराना
३८. अपनी सद्गति का पूरा ख़्याल रखना
३९. किसी का अवगुण चित्त पर नहीं लेना
४०. सदा-अचल-अडोल-अटल रहना
४१. ज़रूरी काम के बिना फ़ालतू नहीं बोलना
४२. मनसा-वाचा-कर्मणा से यज्ञ का होकर चलना
४३. अलौकिक सेवा के बिना आराम हराम समझना
४४. दिखाने के लिए कोई काम या योग में न बैठना
४५. निराकार और साकार दोनों का परिचय बुद्धि में रखना
४६. दूसरों के अवगुण कभी नहीं देखना
४७. अपने दैवी परिवार से जो गिरता है उसे फ़ौरन उठाना
४८. किसी के वाईब्रेशन से प्रभावित न होना।
४९. किसी के अक्ल और शक्ल से प्रभावित न होना।
५०. अपने को सदैव शिव बाबा का माध्यम समझना।
५१. बाप के सदा साथ का अनुभव करना।
५२. श्रीमत में मनमत की कभी भी मिलावट न करना।
५३. ईश्वरीय सेवा में सदा तत्पर रहना।
५४. बड़ों का सम्मान करना।
५५. अपने लिए मानऔर शान की इच्छा न करना।
५६. औरों को सदैव अपने सामने रखना।
५७. बाप की शिक्षा अपने प्रति समझना।
५८. निरन्तर योग में रहना।
५९. तूफ़ानों को तोहफ़ा समझना।
६०. जागती ज्योत बनकर रहना।
६१. स्व दर्शन चक्रधारी बन कर रहना।
६२. देह से न्यारेपन का अनुभव करना।
६३. विघ्न विनाशक बनकर रहना।
६४. बाबा की छत्र छाया में रहना।
६५. अपने को मास्टर सर्व शक्तिमान का बच्चा समझ कर चलना।
६६. अन्य तड़पती हुई आत्माओं को योग दान देना।
६७. मुख से सदैव ज्ञान रत्नों की वर्षा करना।
६८. अमृतवेले के योग अभ्यास में नाग़ा न करना।
६९. लाइट और माइट का अनुभव करना।
७०. अपनी दिन चर्या का चार्ट रखना।
७१. ग़ल्ती को दोहराना नहीं।
७२. सदा चढ़ती कला का अनुभव करना।
७३. अलौकिक सेवा का ख़्याल रखना।
७४. हाँ जी का पार्ट बजाना।
७५. सदा अलंकारी रूप में रहना।
७६. बाबा को सर्व सम्बन्धों से याद करना।
७७. ड्रामा के राज़ को सदा बुद्धि में रखना।
७८. दिव्य गुणों से बाबा को प्रत्यक्ष करना।

वाराणसी में

विश्व कल्याण महायज्ञ प्रति १० सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत जून के 'विकलांग माह' में की गई ईश्वरीय सेवा का समाचार

वाराणसी में पूरे जून में निराश्रित अपंग मूक बधिर एवं निराश्रित महिलाओं एवं बच्चों की ईश्वरीय सेवा उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग के डिप्टी डायरेक्टर के निर्देशानुसार उनके निम्न संस्थानों में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन एवं प्रोजेक्टर शो के कार्यक्रम आयोजित करके की गई :—

१. अपंगों की राजघाट कालोनी,

२. राजकीय बाल पर्यवेक्षण केन्द्र,

३. राजकीय भिक्षु कर्मशाला,

४. राजकीय महिला संरक्षण केन्द्र,

५. मूक बधिर एवं अन्ध विद्यालय,

२. १० सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत 'विकलांग माह' का उद्घाटन करने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें "विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी" का उद्घाटन समाज कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश के डिप्टी डायरेक्टर भ्राता एस० पी० सिंह द्वारा किया गया। ये प्रदर्शनी कोनिया स्थित हरिजन कालोनी में जूनियर हाई स्कूल की बिल्डिंग के प्रांगण में किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन करके डिप्टी डायरेक्टर महोदय ने ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ वार्त्तालाप में कहा कि वास्तव में ऐसे ऐसे जन उपयोगी कार्यक्रमों को केवल एक दो दिन ही नहीं, अपितु थोड़े थोड़े समय के बाद नियमित रूप से प्रवचन और शिक्षा के रूप में हमारे हर संस्थान में होना चाहिए। उन्होंने आगे यह भी कहा कि, "यदि आप ऐसा करने के लिए तैयार होवें तो हम केवल वाराणसी में ही नहीं, अपितु पूरे कमिश्नरी के अन्तर्गत जो अन्य जनपद हैं, वहाँ भी आपके कार्यक्रमों के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश भिजवा सकते हैं। अगर आप की शिक्षाओं से इनका १० प्रतिशत भी सुधार हो जाये तो सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों की अपेक्षाकृत समाज कल्याण एवं चरित्र-निर्माण की दिशा में ये बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। बल्कि मैं तो यही कहूँगा कि हमारे द्वारा किए गए प्रयत्नों की अपेक्षा आपके द्वारा कहीं ज्यादा असर पड़ेगा।"

३. ये प्रदर्शनी दिनाँक २२ जून को प्रातः ८ से १२ बजे तक तथा सायं ४ से ८ बजे तक आयोजित की गई थी, परन्तु कालोनी के लोग सारे दिन आते ही रहे, अतः इसको फिर अनवरत चलने दिया गया और इसको सफल बनाने में केन्द्र के लगभग ३०-३५ भाई बहनें पूरे समय तक ही सेवा पर उपस्थित रहे। अनुभव में ये बात आई कि इस प्रकार के दलित समाज की सेवा करने के भाव से भाई बहनों में और ही ज़्यादा उमंग उत्साह एवं संतुष्टता दिखाई पड़ी। बाद में प्रोजेक्टर शो के भी कार्यक्रम हुए।

४. इसी प्रकार १८ जून, ८० को सायंकाल ६ से ८ बजे तक राजकीय बाल पर्यवेक्षण केन्द्र तथा राजकीय निराश्रित महिला संरक्षण केन्द्र में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन एवं प्रोजेक्टर शो के कार्यक्रम हुए। इन दोनों केन्द्रों में राज्य सरकार द्वारा ऐसे बालकों तथा महिलाओं की परवरिश होती है जो समाज की अनेक कुरीतियों के कारण ये महिलाएँ एवं बच्चे अपने पथ से भटक कर निराश्रित ही नहीं बल्कि समाज के लिए एक अभिशाप हो जाते हैं। ब्रह्माकुमारी ने अपने प्रवचन में बताया, कि 'नारी ही गुरु है' नारी ने ही नर को तारा है', अतः नारी को अपने श्रेष्ठ स्वभाव में रहना चाहिए। नारी के चारित्रक पतन से ही समाज गिर जाता है। बच्चों के प्रति उन्होंने संदेश देते हुए कहा कि 'बच्चे ही भविष्य के कर्णधार होते हैं।' उनके जैसे संस्कार बाल्यकाल से पड़ जाते हैं वे भविष्य की नींव होते हैं। अभी से ही परमपिता

परमात्मा को याद करना है, न कि बूढ़े बनने पर। वृद्धावस्था में तो और ही रोग, शोक घेर लेते हैं, अतः अभी से ही श्रेष्ठ कर्म करने के संस्कार डालना चाहिए'। केन्द्र की आधीक्षिका तथा हरिजन समाज कल्याण विभाग के डिप्टी डायरेक्टर का विशेष ज़ोर था कि महिला केन्द्र की महिलाओं को सुधारने के लिए तो हर सप्ताह ब्रह्माकुमारी बहनों को नैतिक शिक्षा देने आना चाहिए। उनके इस निमन्त्रण पर भी विचार किया जा रहा है और आगे भी आपको की गई सेवा से अवगत कराते रहेंगे।

"हे शिवसंदेशो"

(ले० ब्र० कु० महादेव, कोल्हापुर)

सुनलो बाबा का पैगाम
पाँडवो करलो इंतजाम ।।।
कौरव सेना के आगे।
उड़ावो तुम परमात्म बाँब।
चलना सभी को शाँतिधाम ।।
प्रतिज्ञा अब तक करते आये।

स्वरूप क्यों ना बन पायें।
कहना करना हो जाये।
तब बाप समान बन जायें।
नया उमंग, नया जोश लें लगाके खुद मन को लगाम
समय पर करलो हर काम सदैव याद करो
निजधाम ।।१।।

इस धरती के ज्ञान-सितारे।
ढोल बजावो ज्ञान-नगारे।
रोशन कर लो विश्व को सारे।
कोना-कोना उजियारे।
सब हैं माया के गुलाम, दिखाओ उनको मुक्तिधाम ।।
तुम्हारी सेवा है निष्काम, सबसे ऊँचा तेरा काम ।।२।।

इस धरती पे अवतार तुम।
शिव-शक्ति के मददगार तुम।
देवी-देवता नया धर्म।
करना है अब श्रेष्ठ कर्म ।।।
नया जन्म शिव से मिलन, ज्योति-जगालो जन्म-
जन्म ।।
याद कर लो माम्-एकम्, बोलो सत्यम्, शिवम्
सुन्दरम् ।।३।। सुनलो—

कविता

(ले० ब्र० कु० "निर्मल" खुखल, प० नेपाल)

बीज है, वृक्ष है, टाल टालियाँ है
काँटे हैं, कलियाँ हैं, फूल हैं
मगर
सुगन्ध नहीं।
क्योंकि
वह फूल अक का है।

मैं हूँ, मेरा जीवन है, इन्द्रियाँ हैं,
मन है, बुद्धि है, विद्या है,
मगर
मेरे जीवन में आश नहीं।
क्योंकि
यह जीवन निराशा है।

फिर भी
जैसे
सुगन्ध विहीन
अकॉका फूल
भोले शिव स्वीकारते हैं।
उसी तरह
मुझे भी
भोले शिव ने स्वीकारा है,
मेरा यह जीवन धन्य हुआ
जो
स्वयं भगवान ने संमारा है ।।

मानव कल्याण का आधार—सुचरित्र

ब्र० कु० अवधेश,
आकाशवाणी से की गई वार्ता

मानव ईश्वरीय सृष्टि का शृंगार है। चरित्र मानव जीवन का शृंगार है। जैसे मोती की परत उतरने पर मोती की कीमत समाप्त हो जाती है। वैसे चरित्र गिर जाने से व्यक्ति की कीमत समाप्त हो जाती है। अतः चरित्र ही हमारे जीवन की धरोहर है। इसकी सम्भाल रखना ही हमारा परम कर्त्तव्य है। हम देखते हैं कि जब हमारे देश में चरित्रवान आत्माएं अथवा देवी देवता थे तो विश्व में एक मत, सुख, शान्ति सम्पन्न प्रत्येक मानव महसूस करता था। शेर और बकरी भी एक घाट पर पानी पीते थे। चोरी, लड़ाई, झगड़े का नाम-निशान नहीं था। किसी प्रकार से मन में द्वन्द नहीं कि क्या करें कैसे करें? विपरीत स्थिति क्या होती है? ज्ञान तक न था। सच्चा स्नेह, सच्ची सेवा से समस्त विश्व एक ही सूत्र में बंधा हुआ था। लेकिन आज का मानव चरित्र शब्द के ज्ञान मात्र से भय खाता है। प्रिय वस्तु से घृणा करता जा रहा है। अतः आज हम सभी चरित्र की परिभाषा पर विचार करेंगे। मैं तो ऐसा समझती हूँ कि चरित्र उसे कहते हैं चर+इत्र अथवा चरित्र। जिसकी हर चलन में इत्र जैसी सुगंधी हो। वह चरित्रवान है। जिसकी चलन से घृणा आये। वही चरित्रहीन है।

अब हम देखते हैं कर्मेन्द्रियाँ अर्थात आँख, कान, मुख जिह्वा आदि जीवन के प्रमुख स्रोत हैं, जिनके द्वारा ही मानव कुछ ग्रहण कर सकता है। दूसरों को दे सकता है। अगर ये चारों ही अपनी दिशा और दशा को भूल किसी के वशीभूत हो चुके हैं, तो लेने और देने की क्रिया ही विपरीत हो जायेगी अतः इनका ठीक प्रयोग करना ही चरित्र का मूलभूत आधार है। सर्व प्रथम आँख का कार्य है देखना। हमें क्या देखना है और क्या नहीं देखना है? क्या अच्छा है, क्या बुरा है? इस बात का भी ज्ञान चाहिए। जिससे अपने दृष्टिकोण को परिवर्तन कर सकें। दो नेत्रों के बीच हमें ज्ञान नेत्र दिव्य बुद्धि का प्रयोग करना अनिवार्य है। क्योंकि इन नेत्रों से स्थूल चीज़ नज़र आती है। जो चरित्रहीनता और गिरावट का कारण बन जाती है। दिव्य बुद्धि के प्रयोग से चढ़ती कला और चरित्र रूपी मंज़िल को छू सकेंगे। उदाहरण के तौर पर जब हम किसी व्यक्ति को देखते हैं तो उसका शरीर के द्वारा भाव पैदा होता है। यह सुन्दर है, काला है। लेकिन दिव्य नेत्र इस संकल्प को तुरन्त परिवर्तन करेगा कि शरीर के अन्दर तो आत्मा है यह तो वस्त्र है जो बदली होता रहता है। इस आत्मा की चमक क्या है? इसमें कौन-सी विशेषता है उसे मुझे धारण करना है। इससे ही मेरे जीवन में महानता आयेगी। तो नेत्रों का कार्य केवल देखना ही नहीं है। अपितु यह जानना भी आवश्यक है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है? बुरा देखने की आदत हमारी दृष्टि को दोषी बना देगी। शुभ देखने की कला जीवन को ऊँचा उठा देगी। इस बात की समझ को ज्ञान अथवा दिव्य बुद्धि कहा जाता है।

इसी प्रकार कान रूपी ज्ञानेन्द्रि से बुराई, निन्दा, पर चिन्तन सुनने की आदत ही पतन का कारण है। अतः जिससे मेरा वर्तमान और भविष्य का जीवन उज्ज्वल होता हो। ऐसी बातों को सुनने में शक्ति लगानी चाहिए। वरना तो किनारा कर देना चाहिए। मुख तो सचमुच ही सुरीला बाज़ा है। जो जीवन को खिला देता है। और बेसुरि कठोर आवाज़ से खिली हुई कली तुरन्त मुरझा जाती है। अतः मुख से कभी भी कठोर वचन नहीं निकालने चाहिए। कहा जाता है "अगर जीवन में मिठास नहीं है तो खाली है तो कुछ भी तेरे पास नहीं है।" वाणी की तीखी तलवार ही मानव हृदय को चीरती चली जा रही है। उस तलवार के घाव तो मरहम द्वारा ठीक हो जाते हैं पर इस तलवार का घाव तो जीवन पर्यन्त हरा ही रहता है। यही विश्व में प्रचन्ड समस्याओं को जन्म दिये जा रही है। प्रयत्न करने के बाद भी सफलता नहीं। परन्तु ऐसा कह सकेंगे कि ज्यों-ज्यों

दवा की रोग बढ़ता गया।

व्यक्ति का व्यक्तित्व समाप्त होता जा रहा है। मानव की तुलना एक जानवर से की जा रही है। जो मानव एक देव कहलाता था। नर नारायण, नारी लक्ष्मी कहलाती थी आज वही पशु तुल्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। चरित्रवान व्यक्ति के लिए तो कहा जाता था—"सादा जीवन ऊंचे विचार मानव जीवन का शृंगार" लेकिन अब कहा जाता है "फैशनेबिल जीवन नीच विचार, आज के मानव का शृंगार" यह शारीरिक सौन्दर्यता मानव जीवन के मन में दूषित भाव पैदा करती है। पवित्र दृष्टि को समाप्त करने का आधार सौन्दर्यता का बढ़ावा है। यह आकर्षण समूचे सम्बन्ध को समाप्त कर देता है। दैहिक दृष्टि, दैहिक वृत्ति, दैहिक स्मृति ही सर्व समस्याओं की जड़ है। शरीर पर अर्द्ध नग्न वस्त्र ही नेत्रों को दोषी बना देते हैं। इसका पूरा दोष नारी जाति पर है। जो नारी देश को स्वर्ग बनाने की आधार शिला है, वही गिराने की निमित्त बन गई है। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है। नारी अपने ऊपर लक्ष्मी का नाम तो रखे हुए है। पर कर्म ऐसे न करने पर देवियों के नाम पर कलंक का टीका लगाया जा रहा है। कहा जाता है यत्र नायास्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता, परन्तु आज ऐसा कह सकेंगे? यत्र नयास्ते बसन्ते तत्र राक्षसः अर्थात् जो नारी घर की देवी समझी जाती थी, उसी नारी का आज सरे बाजारों में, किताबों, इश्तहारों में अर्द्ध नग्न चित्र छाप कर बेइज्जती की जा रही है। अतः स्वयं को, परिवार को चारित्रक शिखर पर चढ़ना है तो मुझे स्वयं ही को पाठ सिखाना होगा।

दूसरा कारण अश्लील फिल्में व पुस्तकें भी हैं। कहा जाता है कि वंश या व्यक्ति, कुछ भी हो वातावरण उसे बदल देता है। अश्लील फिल्म देखकर आने वाले व्यक्ति के नयन, चैन भाव देखिये। वह कैसा लगता है। स्वभाविक ही घर में आकर कापी करता है। ऐसी दूषित भावना ही शुभ कामना को समाप्त कर देती है। अतः शुभ भावना और शुभ कामना ही जीवन में श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देती है। इसके लिए जब तक इनका देखना और पढ़ना बंद नहीं करेंगे तब तक हमारा जीवन सफलता के शिखर पर नहीं चढ़ सकता है। एक बार की मुझे घटना याद आ रही है कि जब देहली जा रही थी तो एक छोटा बच्चा सड़क पर खड़े हुए व्यक्ति की पीछे से जेब काट रहा था। अचानक ही उस व्यक्ति का ध्यान गया और उसको पकड़ लिया। कहा, तुम जेब क्यों काट रहे हो, पैसे चाहिए, तो लो। बच्चे ने कहा पैसे के लिए जेब नहीं काट रहा था। मैं तो देख रहा था कि मैं जेब काट सकता हूँ, क्योंकि मैंने कल फिल्म देखी थी उसमें छोटा बच्चा जेब काट रहा था। कहने का भाव इस प्रकार की फिल्म ही तो हमारी दैवी संस्कृति को नष्ट किये जा रही है। इस प्रकार की और घटना है कि एक बच्चे के हाथ में अश्लील नावल थी जो काम वासना को उत्तेजित करने वाली थी। पढ़ने के बाद बच्चे के मन में वेग उत्पन्न हुआ। और क्रिया करने की खोज में लगा रहा। और कोई दिखाई न देने पर इस क्रिया का प्रयोग अपनी छोटी बहिन के साथ किया। एक विषैले कीड़े के वशीभूत भाई ने बहिन के शुद्ध नाते पर कलंक लगाया। कहने का भाव यह अश्लील साहित्य ही मानव स्थिति को विकृत किये जा रहा है। हम सभी को मिलकर मानव मात्र को अश्लील साहित्य से बचाना होगा। परन्तु पहले मैं बचूं तो सभी को बचा सकेंगे। जैसे कर्म मैं करूँगी तो और भी मुझे देखकर करेंगे। आदर सम्मान में पहले आप और कर्त्तव्यनिष्ठा पहले मैं शब्द याद रखें। इससे ही हमारा चरित्र महान बनेगा।

चरित्रहीनता का मुख्य कारण जिह्वा के रसास्वादन भी है। जिसके फलस्वरूप मानव की हिंसात्मक वृत्ति बन चुकी है। जिह्वा के रसस्वाद के कारण नाना प्रकार के चरित्रहीन कार्य कर लेता है। मदिरापान एवंधूम्रपान, मांसाहारी प्रवृति उग्र रूप धारण करती जा रही है। कई बार मैंने मदिरा के नशे में व्यक्तियों को नालियों में पड़े देखा है। अच्छे-अच्छे परिवारों के व्यक्ति अपनी पत्नि को नशे में पीटते हैं। अकर्तव्य करते हैं। बहुत बार धूम्रपान के नशे में व्यक्ति भीषण अग्निकांड लगा देते हैं। मजदूर वर्ग को एक बार रोटी न मिले परन्तु बीड़ी जरूर चाहिए। इससे हमारे नन्हे-मुन्ने बच्चे क्या सीखेंगे। मांसाहारी तथा तमोगुणी भोजन भी मानव की प्रवृत्ति को तामसी बनाता है। अतः दृढ़ संकल्प के द्वारा जिह्वा के रसास्वादन को हमें परिवर्तन करना है। तभी चत्रिवान

नागरिक बनेंगे।

हम जानते हैं कि व्यक्ति ही विश्व की इकाई है। व्यक्ति के परिवर्तन में विश्व का परिवर्तन निहित है। इसलिए स्वयं के चरित्र का निर्माण कर अपने अमूल्य समय, संकल्प, शक्ति और सम्पत्ति रूपी खज़ाने के द्वारा विश्व की कल्याणकारी सेवा कर सकें, तभी सुचरित्रवान बन सकेंगे।

—: ० :—

"बन्धनों से मुक्ति पाई"

ले० ब्रह्माकुमार रामाश्लोक मधुबन (आबू)

मुन्नी ने कहा पप्पू को,
भैया मैं चाहती हूँ,
बाँधना आपको।
बाँधा था मम्मी ने रस्सी से
बचपन में हम दोनों को।
कितना भयानक था,
और कष्टदायक था
बाँधना मम्मी का;
बंधते हैं ठग, चोर और शैतान भी,
लेकिन वह बन्धन,
डराता-घबराता है
चोर और शैतान को, झूठे इन्सान को,
बन्धते हैं पति-पत्नी भी,
शादी के बन्धन में
शादी बरबादी है, विकारों की आँधी है।
बन्धकर वे रोते हैं,
मोह में तड़फते हैं।
बन्दर बन जाते हैं,
फिर वो घबड़ाते हैं॥
स्त्री को विधवा कर,
बच्चों को माया कह,
जंगल में जाते हैं,
साधू बन जाते हैं।
छुड़ाने अपने को, गृहस्थी के बन्धन से;
लेकिन जो बन्धन,
मैं बाँधूगी आपको;
भस्म करेगा वह, सभी दुःख-संताप को,
बस ! केवल इतनी-सी बात मैं कहती हूँ;
धागा पवित्रता का, कलाई में बाँधती हूँ;
टिक जाओ भैया, अब आत्म स्वरूप में,
भूल जाओ अपने इस झूठे देहभान को।
संदेश यही है अब, परम पिता शिव का,
दे रहा है ब्रह्मा के, साकार तन से,
घर-गृहस्थ में रह, पवित्र बनो-योगी बनो॥
कैसा यह मीठा, अनोखा है बन्धन,
इस बन्धन में बन्धके, मुक्ति मिलती तुमको।

"अभी नहीं तो कभी नहीं"

(ले० ब्रह्मा कुमार मुन्नी लाल, बुन्दू कटरा, आगरा)

'आफ़िसर' से मिल करके,
मैंने उन्हें बताया ।
ज्ञान-योग की पुस्तक को,
ठीक ठीक दिखलाया ॥

दबे-दबे मन से बोले साहबज़ादा,
ज्ञान के वास्ते मेरे पास समय नहीं ।
मन में वही विचार हुआ,
अभी नहीं, तो कभी नहीं ॥

'ग्राहकों' की थी भीड़ लगी,
व्यस्त 'दिखा "व्यापारी ।"
वहाँ पहुंचकर भी मैंने
भेद सुनाया सारी ॥

हाँ - हाँ सब ने कहा और
दिखाया यह मजबूरी ।
खाने - पीने धन्धा - धोरी में
जीवन रहा अधूरी ॥

इन बातों के वास्ते, भइआ,
हमको समय नहीं ।
मन ही मन हम बोल उठे,
अभी नहीं, तो कभी नहीं ॥

आगे बढ़कर हमने देखा,
'चलो' 'गुरू' का पैर दबाते ।
खिचड़ी में घी डालकर,
शिष्या, गुरू को स्वयं खिलाते ॥

ज्ञान योग से पावन बनने की,
उनको हमने राह बतायी ।
सुन कर गुरूजी हँसने लगे,
शिष्या भी मन में मुस्करायी ॥

शिष्या और शिष्य जी बोले,
बात आप की सच्ची दीखै ।
परन्तु गुरू जी की बातों से,
बिल्कुल हमको उल्टी दीखै ॥

फिर भी हम सब साफ़ बोलते,
हमको इसमें समय नहीं है ।
ठीक समझ लागी मुझको,
अभी नहीं तो कभी नहीं है ॥

'पन्डा' 'और 'यजमान, से,
मिला पहुंचकर आगे ।
दानी तथा भिखारी भी,
शोर उठा तो जागे ॥

शिक्षक तथा विद्यार्थी को
ज्ञान सुनाया सारा ।
मजदूर तथा पूंजीपति को,
हमने ज़ोर पुकारा ॥

सबसे यह आवाज़ सुना,
ज्ञान शिवा का अच्छा ।
इसके मानने वाले तो,
दिल से होंगे सच्चा ॥

हम लोगों को समय नहीं,
ज्ञान योग करने का ।
ऐसा काल का पंजा सिर पर,
फुर्सत नहीं मरने का ॥

लूट-पाट चोरी करने को,
सूद मुनाफ़ा ख़ोरी को ।
दुराचार-भ्रष्टाचार को
दुखद कर्म और मार धाड़ को ॥

इनको काफी समय सही है,
ईश्वरीय ज्ञान को समय नहीं ।
संगम युग जाने में अब तो,
बिल्कुल ज़्यादा समय नहीं है ॥

अगर अभी न किया अभागे
आगे बिल्कुल समय नहीं है ।
अभी नहीं तो कभी नहीं है
कभी नहीं है कभी नहीं है ॥

यह चित्र ग्याना (अमेरिका) में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। उपस्थित जन-समूह ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन बड़े ध्यानपूर्वक सुन रहा है।

यह चित्र चण्डीगढ़ में आयोजित प्रैस कॉन्फ्रैंस के अवसर का है। भ्राता जगदीशचन्द्र जी उन्हें दस सूत्री कार्यक्रम की रूप-रेखा बता रहे हैं।

यह चित्र बेलगाँव सेवाकेन्द्र द्वारा सोनदत्ती में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर का है। भ्राता जी० बी० हमपन्नावर प्रवचन कर रहे हैं तथा मंच पर ज्ञान किरण के स्वामी नित्यानन्द जी व अन्य वक्तागण बैठे हैं।

यह चित्र गोवा में आयोजित 'राजयोग व चरित्र निर्माण मेला' के उद्घाटन के अवसर का है। गोवा के राज्यपाल भ्राता प्रतापसिंह गिल मेले का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में चीफ सैक्रेटरी व अन्य बहन-भाई खड़े है।

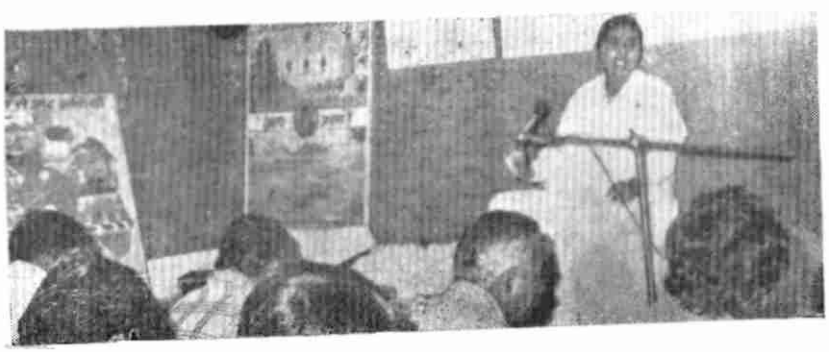

यह चित्र अमरेली में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी शिविर का है वहां के प्रसिद्ध व्यापारी अरविन्द भा पारिख प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० रमिल दमयंती भ्राता रमण भाई आदि बैठे हैं।

यह चित्र ओखापोर्ट में आयोजित समारोह के अवसर का है। वहाँ की नगर पंचायत के प्रमुख भ्राता घनश्याम भाई रावलप्र वचन कर रहे हैं। मंच पर ओखा नगर पंचायत के उपप्रधान व अन्य भाई बहन बैठे हैं।

यह चित्र रायपुर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी है। वहाँ की नगर-निगम के मेयर भ्राता स्वरूप चन्द जैन दीपक जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं।

नीचे का चित्र साँपला मण्डी में आयोजित समारोह के अवस का है। ब्र०कु० शक्ति प्रवचन कर रही हैं। साथ में जयप्रका जी खड़े है। मंच पर ब्र० कु० राज एवं सन्तोष बैठे हैं।

चित्र ग्रीनपार्क सेवा केन्द्र द्वारा ग्राम शाहपुर जट में हरिजनों की पाल में आयोजित प्रदर्शनी का है जिसका उद्घाटन प्रधान भ्राता रतीराम किया। हरिजनों का एक ग्रुप प्रदर्शनी के चित्रों को बड़े ध्यानपूर्वक देख हा है।

इस चित्र में गडक सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में विजेता विद्यार्थी को वहाँ के न्यायमूर्ति भ्राता वैद्य जी शील्ड भेंट कर रहे हैं।

यह चित्र हिम्मत नगर में आयोजित विश्व परिवर्तक आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन के अवसर का है। गुजरात उच्च न्यायालय के जज सुरती जी दीपक जलाकर मेले का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० प्रकाशमणी जी (मुख्य प्रशासिक) व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

आध्यात्मिक सेवा-समाचार

(ब्र० कु० सुन्दरलाल कमलानगर, देहली)

पाटन में पुरुषोत्तम मास में पुरुषोत्तम भगवान का परिचय—पाटन सेवा केन्द्र की ओर से पुरुषोत्तम मास में पुरुषोत्तम भगवान के मन्दिर के पास जहाँ हज़ारों भक्त आत्माएं दर्शनार्थ आती हैं १ जून को वैष्णवों की बाड़ी विष्णु चतुर्भुज की भव्य झाँकी सजायी गई तथा राजयोग प्रदर्शनी लगाई जिसका ३००० आत्माओं ने लाभ लिया।

शिव परमात्मा का संदेश गाँवों में जन-जन तक पहुँचाने के लिए तीन मास में छः गाँवों में प्रदर्शनी एव आध्यात्मिक कार्यक्रम रखा गया था, जिससे २५०० आत्माओं ने लाभ उठाया। सरपंच सहित ४५ आत्माओं ने व्यसन-बुराई छोड़ने का दृढ़ निश्चय किया।

ओखा पोर्ट पर आध्यात्मिक जागृति—जामनगर सेवा केन्द्र की ओर से ओखा पोर्ट, "जहाँ बाबा सहित ३५० भाई बहनें सर्व प्रथम कराची से भारत में पधारे थे" पर त्रिदिवसीय सहज राजयोग प्रदर्शनी लगाई गई। अनेक आत्माओं ने प्रदर्शनी का लाभ लिया तथा योग शिविर किया।

वहाँ के पुराने लोग जो, जिन्होंने बाबा तथा बहिनों को पहले-पहले कराँची से ओखा पहुँचने पर मिले थे और जो उन्हें ओखा से आते जाते समय भी बाबा से मिले थे, वे भी अब सम्पर्क में आये।

पाँचोट में बुराई छोड़ने के फार्म भराये गये—१० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत महेसाणा सेवा केन्द्र की ओर से पांचोट नामक गाँव में द्विदिवसीय प्रदर्शनी की जिसका उद्घाटन वहाँ के सरपंच ने किया। १०० आत्माओं ने राजयोग की अनुभूति प्राप्त की।

इसी प्रकार मोटी दाऊ में एक दिन की प्रदर्शनी की जिसमें गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी भाग लिया, 'ज्ञान-योग महायज्ञ' के फार्म भी भराये गये सभी खुशी-खुशी से अपनी बुराइयों को छोड़ने का सहयोग देते गये। **सभी बहुत आश्चर्य से कहते कि हमने कोई संस्था नहीं देखी जो इतना बड़ा यज्ञ रचे और पैसे की जगह व्यसन दान में लें।**

इसी प्रकार मेहसाना में जहाँ १५०० हरिजन के मकान हैं वहाँ प्रोग्राम रखा। अध्यक्ष पद जीवन भाई ठाकुर, जो अच्छे समाज कार्यकर्त्ता तथा जनसत्ता पेपर के रिपोर्टर हैं, ने लिया। काफी संख्या में लोगों ने लाभ लिया।

बाप-दादा की बिछुड़ी, प्यासी आत्माओं, विकलाँगों को सहारा—बापदादा के इशारे को लेकर दस सूत्री कार्यक्रम को बुद्धि में रख, तीन दिन की प्रदर्शनी बारीपदा से कुछ दूर मुकुलिसि नामक स्थान पर, बापदादा के बिछुड़े हुए, प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने के लिए, **गरीब हरिजन और विकलाँग को समस्याओं से बचाने के** लिए रखी गयी। इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में लगभग १५०० आत्माओं ने बाबा का संदेश प्राप्त किया। ७० आत्माओं ने राजयोग शिविर में भाग लेकर आत्मा तथा परमात्मा की अनुभूति की।

झुँझनूँ में ज्ञान-योग की झंकार—जयपुर (राजापार्क) सेवाकेन्द्र की ओर से झुँझनू में दस दिनों के लिए प्रदर्शनी का आयोजन किया गया; प्रदर्शनी को देखने विभिन्न वर्गों के लोग, जैसे मजिस्ट्रेट, सैशन जज, व्यापारी तथा एस० पी० आदि आए। इस प्रदर्शनी को लगभग २० हज़ार आत्माओं ने देख कर शिव बाबा का परिचय लिया तथा १२० आत्माओं ने राजयोग शिविर से परमात्मानुभूति की।

पूना में अपंगों की सेवा–बुराई छोड़ने को तैयार हुए—पूना सेवा-केन्द्र की ओर से दस सूत्री कार्यक्रम के उपलक्ष में अपंगों की सेवा की गई। पूना आर्टिफ़िशल लिम्ब सेन्टर (Artificial Limbe center) में लगभग १०० आत्माओं की प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो के द्वारा सेवा की गई। बाद में सभी ने फ़ार्म भर कर एक अवगुण छोड़ने की प्रतिज्ञा की, किसी ने कहा हम 'काम' विकार छोड़ते हैं और किसी ने कहा हम 'अहंकार'।

राँची में हरिजनों को 'हरि' का परिचय मिला—'विश्व कल्याणार्थ ज्ञान योग महायज्ञ' की सफलता के लिए दस सूत्री कार्यक्रम की योजना के अनुसार राँची सेवा केन्द्र की ओर से गुरुनानक पोलियो सेन्टर वरियात् में कुछ विशिष्ठ डाक्टर्स तथा लगभग ३० अपंगों को दिव्य-ज्ञान सुनाया गया तथा ईश्वरीय साहित्य दिया जिससे उन्होंने श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा ली।

साथ ही साथ हरिजन बस्ती में दो दिवसीय प्रदर्शनी द्वारा ३५० आत्माओं को सुख-शान्ति का मार्ग दर्शाने में बहुत ही सफ़ल रही।

फतेपुर में जन-जन को परमात्मा का परिचय—दस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत कानपुर सेवा केन्द्र (सिविल लाइन्स) की ओर से ग्राम (माखी) में एक दिवसीय 'चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी' रखी गई जिसे ४-पाँच गाँवों के भाई बहनों ने देखा और परमात्मा का परिचय पाया।

इसके बाद फतेपुर में आबूनगर के 'सत्संग भवन' में प्रदर्शनी रखी। इसका उद्घाटन वहाँ के सांसद भ्राता हरीकृष्ण शास्त्री सुपुत्र स्व० लाल बहादुर शास्त्री ने किया। प्रदर्शनी देखकर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए कि चरित्र निर्माण का कोई मार्ग है तो इसी माध्यम से और कहा मैं फतेपुर की जनता से अपील करूँगा कि वो अवश्य देखें और अपनी समस्याओं का सहज समाधान इस विद्यालय से प्राप्त करें।

बेलगाम में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—बेलगाम सेवा केन्द्र की ओर से गोकाक निवासियों के विशेष निमन्त्रण पर गोकाक शहर में २४ मई को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी और राजयोग शिविर समारोह रखा गया था। जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध कादँबरीकार भ्राता कृष्ण मूर्ति पुराणीक द्वारा हुआ, इस कार्यक्रम में वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

रोपड़ में कुष्ठ रोगियों की सेवा—रोपड़ सेवा केन्द्र की ओर से १० सूत्री कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए वहाँ के गुरुनानक कुष्ठ (कोड़ी) आश्रम के पास आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, वहाँ के शिव मन्दिर में सब कुष्ठी इकट्ठे हो गये जिनकी संख्या ४२ थी। सबने लाभ उठाया तथा हाथ खड़े कर १० मास के लिए काम विकार छोड़कर नम्रता का गुण धारण करने की प्रतिज्ञा ली।

ललितपुर में ईश्वरीय ज्ञान के चित्रों द्वारा चरित्र-निर्माण कार्य—झाँसा सेवा केन्द्र की ओर से बाप दादा की प्रत्यक्षता के लिए ललितपुर में त्रिदिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन मदन मोहन धर्मशाला में किया गया था जिसका उद्घाटन काँग्रेस (आई) के अध्यक्ष भ्राता सृजनन्दन शर्मा जी ने किया। उद्घाटन अवसर पर स्वर्ग में एक सीट खाली है नाटक भी दिखाया गया। शर्मा जी ने अपने विचार व्यक्त करते बताया कि, यह संस्था बहुत अच्छा कार्य कर रही है तथा इसकी एक शाखा यहाँ भी होनी चाहिए।

रामपुर में निराकार राम का परिचय—मुरादाबाद सेवा केन्द्र की ओर से निराकार राम भगवान (शिव बाबा) का वास्तविक परिचय देने के लिए राम पुर में वहाँ के विद्या हाई सेकेण्डरी स्कूल में प्रदर्शनी लगाई जिसका उद्घाटन वहाँ के डी०एम० ने किया। उन्होंने प्रदर्शनी देखने के पश्चात् इसे आध्यात्मिक उन्नति का सर्वश्रेष्ठ साधन बताया और कहा कि यहाँ पर विकारों को छुड़ाकर मानव को देवता बनाने का सहज मार्ग दर्शाया जाता है। इस प्रदर्शनी को देखकर अनेकानेक आत्माओं ने शिवबाबा का परिचय पाया।

शान्ति-शक्ति प्रदायक प्रदर्शनी—भरतपुर सेवा केन्द्र की ओर से चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन पंचमुखी हनुमान के मन्दिर में तीन दिन के लिए किया गया जिसमें बहुत-सी आत्माओं को शिव बाबा का सन्देश मिला, जिसका उद्घाटन गिरराज प्रसाद तिवारी 'विधायक' राजस्थान ने किया। उन्होंने अपने विचार प्रगट करते हुए बताया कि यह प्रदर्शनी भौतिकता से दूर, मनुष्य को आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित करने तथा समाज से अनेक बुराइयों, कुरीतियों को नष्ट करेगी।

कलकत्ता में हरिजन कल्याण कार्यक्रम—१० सूत्रीय प्रोग्राम प्रमाण कलकत्ता के विभिन्न स्थानों पर बाबा के सन्देश देने हेतू प्रोग्राम चलते रहते हैं। अभी हाल में ही ११ जून को कलकत्ता के दक्षिण भाग में कारपोरेशन की हरिजन बस्ती में प्रोजेक्टर शो व प्रवचन का कार्यक्रम चला जहाँ ५००० हरिजन रहते हैं। १५०० आत्माओं ने विधी पूर्वक बाबा का सन्देश प्राप्त किया।

दिल्ली में हरिजन उत्थान कार्यक्रम—हरिजन उत्थान सप्ताह के अन्तर्गत पालम सेवा केन्द्र की ओर

से बाल्मिकी मंदिर, मोर लाईन, दिल्ली कैन्ट में १५ जून को आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें विशेष रूप से प्रवचन, गीत, बच्चों के सामूहिक गीत तथा नृत्य आदि द्वारा जातिभेद का उन्मूलन, हरिजनोद्धार के उपाय, पिछड़े वर्गों में बढ़ती कुरीतियों और व्यसनों के उन्मूलन एवं आध्यात्मिक जागृति लाने आदि विषयों पर मार्ग दर्शन किया। प्रोग्राम से लगभग १५० भाई-बहनों ने लाभ प्राप्त किया।

शाहपुर जट्ट में हरिजनों की सेवा—दिल्ली (ग्रीनपार्क) सेवा केन्द्र की ओर से हौज-खास के निकट शाहपुर जट्ट गाँव में एक त्रिदिवसीय प्रदर्शनी रखी गयी जिसमें गाँव के हरिजन आत्माओं की एक "श्रेष्ठ एण्ड क्रेडिट बाबा अम्बेडकर (Thrift & Credit Sciety of Baba Ambedkar) नाम की सोसायटी है। इस सोसायटी के सहयोग से प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा जिससे लगभग १००० आत्माओं ने बापदादा का संदेश लिया तथा ३० आत्माओं ने राजयोग शिविर का अनुभव किया।

नागपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—नागपुर सेवा केन्द्र की ओर से श्री पोद्दारेश्वर राममन्दिर में विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन दस दिन के लिए किया गया इसका उद्घाटन किर्तन-भूषण श्री बाबा साहेब सालोकर जी ने किया। प्रदर्शनी को लगभग ५००० आत्माओं ने देखा तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली। इस अवसर पर राजयोग शिविर तथा ज्ञान शिविर, से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया तथा राजयोग फिल्म भी दिखाई गई। नागपुर सेवा-केन्द्र की ओर से कामठी में राजयोग प्रदर्शनी की गयी।

बड़ौदा में इंजीनियरों और डाक्टरों की सेवा—बड़ौदा सेवा केन्द्र की ओर से डाक्टरों के लिए योग शिविर का आयोजन ९ जून को किया गया जिसमें उनकी ऐसोसियेशन के द्वारा निमन्त्रण भेजा था। ७० डाक्टरों ने योग शिविर का लाभ लिया, सबने अपने-अपने लैटर पैड पर अपनी राय लिख कर दिया।

एक इन्जीनियरों का स्नेह मिलन १५ जून को रखा था जिसमें ३० इन्जीनियरों ने भाग लेकर अच्छा अनुभव पाया।

हिम्मतनगर में विश्व परिवर्तक आध्यात्मिक मेला—हिम्मतनगर में विश्व परिवर्तक आध्यात्मिक मेला १० मई से २१ मई तक आयोजित किया गया, मेले के पूर्व दो प्रेस कान्फ्रेन्स रखी गईं, २१ प्रेस रिपोर्टर ने लाभ उठाया और एडवटाईजमेन्ट में बहुत सहयोगी बने।

१० मई को सवेरे देवी-देवताओं की भव्य झाँकी सहित शोभा यात्रा निकाली गई। शाम को उद्घाटन समारोह में प्रमुख आदरणीय बहन ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणी थी। मेले का उद्घाटन न्यायमूर्ति भ्राता अरुण ऐनसुरती जी (गुजरात हाईकोर्ट) ने किया। योग शिविर का उद्घाटन भ्राता कंचन भाई सी० परीख (कुल सचिव गुजरात युनि०) ने किया इस अवसर पर अनेक विशेष अतिथि भी उपस्थित थे।

मेले के अन्तिम दिन तक ९७,००० आत्माओं को प्यारे शिवबाबा का परिचय मिला। राजयोग शिविर में १२०० आत्माओं ने आत्मा, परमात्मा की अनुभूति को। प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्नेह मिलन भी रखा गया जिससे १७५ आत्मा ने लाभ लिया।

समाप्ति समारोह में विशेष अतिथि भ्राता शाह-साहेब (डिस्ट्रीक्ट एण्ड सेशन जज) और मनुभाई साहेब (दुर्गा आयल मिल हिम्मतनगर) थे। "स्वर्ग में एक सीट खाली है" ड्रामा भी दिखाया गया, जिस द्वारा २५०० आत्माओं ने लाभ लिया।

अहमदाबाद में संस्कार परिवर्तन महोत्सव—अहमदाबाद (मणीनगर) सेवा केन्द्र की ओर से सेवा केन्द्र के ८वें वार्षिकोत्सव के निमित्त यहाँ के फुटबाल ग्राउन्ड में संस्कार परिवर्तन महोत्सव, मिनी मेले का आयोजन किया गया। इसके पूर्व प्रेस कान्फ्रेन्स की गयी जिसमें १५ प्रेस रिपोर्टर आये और मेले का समाचार सुप्रसिद्ध समाचार पत्रों में आया मेले का उद्घाटन गुजरात हाईकोर्ट के जज वी० वी० ब्रेदरकर जो ने किया, मेले को देखकर वह बहुत खुश हुए ओर कहा यह कि ये संस्था मनुष्य में कैसे ऊँचे संस्कार भरने का कार्य कर रही है।

मेला २०,००० लोगों ने देखा तथा काफ़ी संख्या में लोगों ने राजयोग शिविर का लाभ लिया।

ब्रह्मपुर में ग्रामवासियों तथा कैदियों की सेवा—ब्रह्मपुर सेवा - केन्द्र की ओर से उदयगिरी नाम के गाँव में एक दिन के लिए प्रदर्शनी लगाई गई जिससे ३००० आत्माओं ने प्यारे शिव बाबा का परिचय पाया जिसमें डाक्टरों तथा इन्जीनियरों ने भी भाग लिया। शाम को प्रोजेक्टर शो रखा गया जिसमें २००० आत्माएँ बड़ी शान्ति से शिव बाबा का परिचय सुनती रहीं।

इसके बाद ब्रह्मपुर के पास भंजनगर में जेल में कैदियों की सेवा प्रवचन व प्रोजेक्टर शो द्वारा की गई, जिससे ३०० कैदियों ने भी अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा ली।

सिंदरी में निबन्ध प्रतियोगिता—सिंदरी सेवा केन्द्र की ओर से एक निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें समारोह के सम्पन्न होने के साथ पुरस्कार वितरण सेवा केन्द्र पर ही रखा गया। जिसमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार के अलावा अन्य सभी प्रतियोगियों को सान्त्वना पुरस्कार दिया गया। बच्चों के अभिभावकों का भी ईश्वरीय साहित्य सौगात स्वरूप में दिया गया।

मोदीनगर में ईश्वरीय सेवा—मोदीनगर सेवा केन्द्र की ओर से आस-पास के ग्रामों में ईश्वरीय संदेश पहुँचाने का कार्य चल रहा है। गाँव निवाडी में प्रदर्शनी और राजयोग शिविर रखा गया। लगभग ८०० आत्माओं ने परिचय पाया तथा ५० आत्माओं ने योग शिविर कर परमात्मानुभूति की ओर कदम बढ़ाया।

मेरठ में ग्रामवासियों की सेवा—मेरठ सेवा-केन्द्र की ओर से सर्व आत्माओं को प्यारे शिव बाबा का परिचय देने के लिए आस-पास के ग्रामों की सेवा चल रही है। अभी नज़दीक में कुराली नामक ग्राम में प्रदर्शनी और राजयोग शिविर के द्वारा सर्व ग्रामवासियों को परमात्मा का सन्देश मिला।

भुसावल में 'शिव दर्शन प्रदर्शनी'—भुसावल सेवा केन्द्र की ओर से वरणगाँव में शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन वहाँ के एक प्रसिद्ध डॉक्टर ने किया। इसे २० हज़ार आत्माओं ने देखा और प्रभु-परिचय प्राप्त किया। अभी वहाँ अनेक आत्माएँ राजयोग शिविर कर रही हैं।

इसमें एक समाचार पत्र का प्रतिनिधि भी आया था। उन्हें १० सूत्री कार्यक्रम और एक बुराई छोड़ने के विषय में बताया गया। इससे वे बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने स्वयं भी कहा कि मैं शराब नहीं पीयूंगा।

भुसावल सेवा केन्द्र के बाहर ही ग्राउन्ड में इन्दिरा गाँधी जी का प्रोग्राम था। वहाँ बहनों ने उनका स्वगत किया और उन्हें शिव बाबा का चित्र सौगात स्वरूप दिया जिसे पाकर वह बहुत खुश हुईं।

काँसाबेल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—गुमला (बिहार) सेवा-केन्द्र की ओर से काँसाबेल (म०प्र०) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन स्थानीय चेयरमैन भ्राता राम भगत जी ने किया। बच्चों द्वारा आध्यात्मिक नृत्य एवं अलौकिक गान से कार्यक्रम में चार चाँद लग गये। ब्रह्माकुमारी बहनों ने प्रवचन भी किये।

उद्घाटन समारोह के अन्त में उद्घाटन कर्ता चेयरमैन जी एवं मुख्य अतिथि श्री जे० आर० पाण्डेय (पशुचिकित्सक) ने प्रदर्शनी की काफ़ी सराहना की एवं बताया—'यह हमारा सौभाग्य है कि इस नगरी में ऐसा पावन कर्तव्य किया गया है एवं चरित्र निर्माण का दर्शाया गया, इसके साथ बताया कि सर्व समस्याओं का समाधान "सहज-राजयोग" है।' इस प्रदर्शनी को हज़ारों आत्माओं ने देखा।

कररीया में प्रदर्शनी तथा बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा—वीरगंज (नेपाल) सेवा केन्द्र की ओर से कररीया नामक स्थान पर त्रिदिवसीय प्रदर्शनो का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के B.D.O. ने किया।

इस अवसर पर हजारों आत्माओं ने बाबा का संदेश पाया तथा १६० आत्माओं ने मांसाहार, मद्यपान, धूम्रपान आदि-आदि अन्य बुराइयों को छोड़ने का प्रण लिखित रूप में दिया।

भोपाल में चार मेलों के शंखनाद द्वारा ईश्वरीय संदेश—भोपाल के कोने-कोने में ईश्वरीय संदेश देने हेतु चार स्थानों पर चार मेलों का आयोजन किया गया। हर मेले के उद्घाटन के पूर्व इलाके में सुन्दर झाँकियों तथा बैन्ड सहित सुन्दर शोभा यात्रा निकाली जाती थी, जिससे पब्लिसिटी का कार्य बहुत

सहज हुआ। नित्य प्रति अलग-अलग विषयों पर सम्मेलनों का आयोजन हुआ, जिसमें नित्य नये-नये दिव्य नाटक भी दिखाए गए।

पहले मेले का उद्घाटन २२ मार्च को भोपाल के प्रसिद्ध विद्याविशारद भ्राता ईश्वर नारायण जोशी ने दीप जलाकर तथा काम, क्रोध आदि अंकित गुब्बारों को जलाकर किया जिसकी अध्यक्षता दादी निर्मल शान्ता जी ने की। उन्होंने अपने गुह्य विचारों को तेजस्वी भाषण के रूप में प्रस्तुत किया। नित्य कार्यक्रमों में ५ विश्व-विद्यालय के उप कुलपति मुख्य अतिथि थे।

दूसरे मेले का उद्घाटन २ अप्रैल को मध्यप्रदेश की पोस्ट मास्टर जनरल श्रीमती सुशील चौरसिया जी ने किया। इस मेले की अध्यक्षता मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी ने की। दादी जी के साथ एक पत्रकार गोष्ठी भी हुई जिसमें १८ पत्रकारों ने भाग लिया।

तीसरे मेले का आयोजन भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स की डेढ़ लाख आबादी वाली कालोनी में हुआ। जिसका उद्घाटन १२ अप्रैल कोB,H.E.L.के जनरल मैनेजर भ्राता जी० डी० दत्ता जी ने किया। मेले की अध्यक्षता दादी मनोहर इन्द्रा जी ने की। उन्होंने अपने सार गर्भित प्रवचन द्वारा सबको आकर्षित किया। मेले के मुख्य अतिथि के रूप में B.H.E.L. के एडमिनिस्ट्रेटर मैनेजर के० एम० राव जी थे।

चौथे मेले का उद्घाटन घनी आबादी में स्थित मेन मार्किट के बाल-विहार पार्क में २० अप्रैल को म० प्र० के हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष भ्राता आई० ए० एस० जी राव ने किया। समापन समारोह पर दीदी मन मोहिनी जी पधारी थीं। जिसमें मुख्य अतिथि म० प्र० के राज्यपाल के विशेष सलाहकार भ्राता राधाकृष्न त्रिवेदी जी थे।

चारों मेलों के समाचार एवं फोटो नई दुनिया, दैनिक भास्कर, एस० पी० क्रानिकल, नवभारत, हितवाद आदि में प्रकाशित हुए।

इस प्रकार भोपाल में धूम मचा देने वाले चारों मेलों से २ लाख आत्माओं ने सन्देश प्राप्त किया, ११००० आत्माओं ने योग-शिविर किया, २५००० आत्माओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम व सम्मेलनों में भाग लिया।

उज्जैन कुम्भ मेले में "नव विश्व आध्यात्मिक मेला"—जन-जन को परमात्मा का संदेश देने, बिछुड़ी हुई प्रभु-मिलन की प्यासी आत्माओं को परमात्मा से मिलन कराने के लिए उज्जैन कुम्भ (सिंहस्थ) मेले में "नव विश्व आध्यात्मिक मेले" का आयोजन किया गया। ३० तारीख को प्रातः एक विशाल शोभा-यात्रा निकाली गयी। इस अवसर पर दादी प्रकाशमणि जी भी उपस्थित थीं, जिन्हें खुली कार में बिठाया था। इस शोभा में ४, ५ कारें' जीप हाथी, तथा सैकड़ों ब्रह्माकुमार तथा कुमारियाँ थे। शोभा यात्रा शहर के मुख्य भागों से होती हुई निकलीं। रास्ते में जन-जन ने दादी जी को फूल-मालाओं से स्वागत किया, यहाँ तक कि साधु सन्यासियों ने भी किया।

३० तारीख सायं को मेले का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी ने पहले शिव बाबा का झण्डा फहरा कर, फिर दीप प्रज्वलित करके किया। मुख्य अतिथि भ्राता एम० सुन्दरम्, अध्यक्ष, म० प्र० लोक सेवा आयोग इन्दौर, श्रीमती सुन्दरम् एवं प्रसिद्ध गीतकार भ्राता भरतव्यास जी थे। इस अवसर पर अनेक सम्मेलन भी हुए जिनका समाचार इन्दौर तथा उज्जैन के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। रेडियो इन्टरवयू भी प्रसारित हुआ था।

इस मेले को १३लाख ७०हज़ार लोगों ने देखा। ५० आत्माओं ने योग शिविर किया। इस मेले को देखने वालों में प्रमुख थे—अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के महाराज राम किशोर जी, महामण्डलेश्वर स्वामी हरिप्रकाश जी, विश्व धर्म संगम प्रणेता के मुनि सुशील कुमार जी, नगर निगम तथा जिला प्रशासन की ओर से आयोजित स्वागत समारोहों में ब्र० कु० हृदय मोहिनी एवं आरती बहन का स्वागत किया, नगर निगम के स्वागत समारोह में ग्वालियर की राज माता ने भी बहनों का स्वागत किया।

इस प्रकार ३० मार्च से ३० अप्रैल तक १६ सम्मेलनों, एक संगीत निशा तथा १५ खुले मंच पर आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किए गये।

पूना में "विश्व कल्याण महायज्ञ" समारोह—२१ मई को पूना सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के प्रसिद्ध तिलक स्मारक मन्दिर में विश्व कल्याण महायज्ञ के उपलक्ष में प्रोग्राम किया गया जिसमें सबसे पहले

१० सूत्री कार्यक्रम पर प्रकाश डाला गया।

उसमें राजयोग के विषय पर प्रवचन तथा योग कमेन्ट्री भी सुनाई गई। मुख्य अतिथि "पूना हैरल्ड" न्यूज़ पेपर के सम्पादक, भ्राता एस० डी० बाग थे जिन्होंने अपने विचार प्रकट करते हुए आम जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि—"मानव की सभी बुराइयाँ केवल राजयोग करने से ही छूट सकती हैं। मुझ पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। राजयोग का अभ्यास सभी के लिए अति आवश्यक है, मैं सभी भाई-बहनों से अनुरोध करता हूं कि आप को भी राजयोग से लाभ लेना चाहिए, मैं भी राज योग सीखूंगा।"

इसका समाचार "पूना हैरल्ड" (अंग्रेजी) तथा **'तरुण भारत'** तथा **'केसरी' (मराठी)** समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

पेटलाद में "दिव्य मानव निर्माण" आध्यात्मिक प्रदर्शनी—१० सूत्री कार्यक्रम की योजनानुसार पेटलाद में त्रिदिवसीय दिव्य मानव निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन वहाँ के एन० के० हाई स्कूल में किया गया जिसका लाभ लग भग १० हज़ार आत्माओं ने उठाया तथा १२५ आत्माओं ने योग शिविर कर परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने की विधि को जाना।

गाज़ियाबाद, विकास प्रदर्शनी में मानव उत्थान प्रदर्शनी– विश्व-कल्याण महायज्ञ के १०-सूत्री कार्यक्रम के अनुसार गाज़ियाबाद में विकास प्रदर्शनी में मानव उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जो एक मास तक चली, इस प्रदर्शनो को ३५ हज़ार आत्माओं ने देखकर मनुष्य से देवता बनने की प्रेरणा ली।

इसके बाद संग्रहालय में ही न्यूज़ पेपर के सम्पादक आये जिन्हें १०-सूत्री कार्यक्रम से अवगत कराया गया। वह लोग इससे अत्यधिक प्रभावित हुए तथा १०-सूत्रों को समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिए ले गए।

बिन्दकी में चरित्र उत्थान प्रदर्शनी—कानपुर (नया गंज) सेवा केन्द्र की ओर से दस सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत उद्योग नगरी "बिन्दकी" में चार दिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई, जिसे बिन्दकी के सुप्रसिद्ध शिवालय "श्री कैलाश शिव मन्दिर" में लगाया गया जिसे लगभग १० हज़ार आत्माओं ने देखा तथा भाव-विभोर हो गयीं। इन में विभिन्न वर्गों के लोग, नेता, सरकारी कर्मचारी, विद्यार्थी, व्यापारी आदि थे।

शिमला में ईश्वरीय ज्ञान की धूम—१०-सूत्रीय कार्यक्रम से सर्व भाई बहनों में एक नया उत्साह, एक लग्न और एक नई उमंग आ गयी है। इसी कारण हिमाचल प्रदेश में शिमला सेवा-केन्द्र की ओर से २ मास में १० प्रदर्शनियाँ लगाई गईं जिसका अपना ही एक विशेष प्रभाव पड़ा। इससे देश-विदेश की आत्माओं को शिव बाबा का सन्देश मिला जिसमें से निम्न स्थान मुख्य हैं।

कोटरवार्ड जो शिमला से साढ़े तीन घंटे के सफ़र के बाद आता है, द्वि दिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई जिसको लगभग २००० आत्माओं ने देखा। इस स्थान पर पहली बार ही ऐसा धार्मिक कार्यक्रम हुआ है।

दूसरे, शिमला से ८० कि० मी० दूर 'थानेधार' तहसील में द्वि दिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई जिसे १५०० आत्माओं ने देखा।

तीसरा कार्यक्रम शिमला से १०० कि० मी० दूर रामपुर नामक स्थान में २ दिन की प्रदर्शनी फांग के मेले में रखी जिसे ५००० आत्माओं ने देखा। वहाँ दूर-दूर के ऐसे गाँवों से भी लोग देखने आये थे जहाँ आसानी से पहुँचा जा नहीं सकता।

एक प्रदर्शनी तहसील करसोम के मेले में लगाई गई जिससे ४००० आत्माओं ने लाभ उठाया तथा ऐसा ही एक विद्यालय खोलने का निमंत्रण भी दिया जहाँ सभी इस शिक्षा को ग्रहण कर सकें।

श्री गंगानगर के विभिन्न स्थानों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—श्री गंगानगर सेवा केन्द्र की ओर से तहसील अनूपगढ़ के ग्राम १२ जीवी, जैतसर, विजय नगर में प्रदर्शनी और प्रोजेक्टर शो बड़े धूम-धाम से किया गया जिससे हज़ारों आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त तहसील सूरतगढ़ में चरित्र निर्माण, विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी रखी गई वहाँ की नगर पालिका के लाइब्रेरी हाल में व सूरत गढ़ के टी० बी० (आर सी पी) कालोनी, रेलवे कालोनी एवं नगरपालिका के बग़ीचे में प्रोजेक्टर शो द्वारा हज़ारों आत्माओं को आध्यात्मिक ज्ञान

एवं सहज राज योग की शिक्षा दी । जिससे सभी ने विशेष अनुभव प्राप्त किये।

चिकोड़ी शहर में जन-जन को परमात्मा शिव का परिचय—१०- सूत्री कार्यक्रम की सफलता एवं जन-जन को संदेश देने के लिए जनता की रुचि के अनुसार चिकौड़ी शहर में शिवदर्शन चित्र प्रदर्शनी तथा 'राजयोग शिक्षण शिविर' रखा गया जिसका उद्घाटन वहाँ के प्रसिद्ध स्वामी महंत महा स्वामी जी (चरंती मठ) ने किया।

इस अवसर पर वहाँ के अनेक समाज सेवी संस्थाओं के प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। हज़ारों व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम को बहुत रुचि पूर्वक देखा। वहाँ के समाज सेवी भ्राता एम के कठगीमठ के अनुरोध से चिकोड़ी में सेवा केन्द्र खोला जा रहा है।

अणु शक्तिनगर (बम्बई) में परमात्म बम का विस्फोट—विश्व कल्याण महायज्ञ के इस वर्ष में बम्बई घाटकोपर सेवा केन्द्र की ओर से अणुशक्तिनगर (भामा अणु परमाणु रिर्सच केन्द्र) में त्रि द्विवसीय राजयोग प्रदर्शनी, जागृति समिति के सौजन्य से रखा गया था। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के हैड कैमिकल इन्जीनियरिंग ग्रुप के डारेक्टर भ्राता आर० के० गर्ग जी ने किया। प्रदर्शनी के पश्चात् उन्होंने कहा कि हिमालय की चोटियों व एकान्त में जाकर शान्ति को प्राप्त करना असम्भव है लेकिन राजयोग के द्वारा घर गृहस्थ में रहकर सुख शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रदर्शनी को अनेक आत्माओंने देखा, ४५ आत्माओं ने राजयोग शिविर कियाजिसके परिणाम स्वरूप वहाँ उप-सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई।

नासिक में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी—नासिक सेवा केन्द्र की ओर से अहमद नगर के कोपर गाँव नामक स्थान पर विश्वकल्याण महायज्ञ के उपलक्ष में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसे देख कर हज़ारों आत्माओं ने लाभ लिया।

इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन नासिक के बाइटको हाई स्कूल में किया गया, जिसका उद्घाटन भ्राता दादा साहिब पातेनीस ने किया जो कि गाँवकरी समाचार पत्र के सम्पादक हैं। इसे भी हज़ारों आत्माओं ने देख कर जीवन को पवित्र बनाने की प्रेरणा ली।

अमरेली में प्राचीन सहज राजयोग प्रदर्शनी—१०-सूत्री कार्यक्रम के अनुसार अमरेली सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के कन्याशाला नं० १ में प्राचीन सहजराजयोग प्रदर्शनी तथा शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन शहर के अग्रणीय भ्राता अरविंद भाई पारिख ने किया इस प्रदर्शनी को ११०० आत्माओं ने देखा जिसमें शहर के एस० पी०, सिविल सर्जन, बैंक मैनेज़र तथा नगर पालिका के प्रमुख भ्राता किरिट भाई जोशी का नाम उल्लेखनीय है। ४० आत्माओं ने योग शिविर से भी लाभ लिया।

काठ माण्डू में प्रदर्शनी—काठमाण्डू सेवाकेन्द्र की ओर से वहाँ के स्वयंभू बुद्ध मन्दिर में, जहाँ बुद्ध जयन्ति पर लाखों नर-नारी दर्शनार्थ आते हैं" प्रदर्शनी लगाई गई जिसे देख हज़ारों आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया।

राम दुर्ग में विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी—बेलगाम सेवा केन्द्र की ओर से रामदुर्ग शहर में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी रखी गई जिसे शहर के कोने-कोने से आकर आत्माओं ने देखा, इसको शहर के भ्राता बी० वी० हिररेडी, प्रिंसीपल पावटे तथा कुल गोड आदि अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने देखा।

पणजी (गोवा) में "चरित्र निर्माण एवं राजयोग आध्यात्मिक मेला"—जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने हेतु पणजी के "म्युनिसिपल पार्क" में १० दिन के लिए चरित्र-निर्माण एवं राजयोग आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। उद्घाटन गोवा-दमण के गवर्नर भ्राता प्रताप सिंह गिल द्वारा दीपक जलाकर किया गया, साथ में मुख्य सचिव भ्राता आर० एम० अग्रवाल, चीफ स्पीकर के रूप में उपस्थित थे। इस मेले को शहर के तथा निकटवर्ती ग्रामों के ५०,००० लोगों ने देखा तथा श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली, ५०० लोगों ने योग शिविर किया।

इस मेले का समाचार यहाँ के दैनिक समाचार पत्रों 'गोमन्तक', 'नवप्रभा', 'राष्ट्रमत' 'नव हिन्द टाइम्स' में प्रकाशित हुआ।

हकियाक में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—दाण्डेली सेवा केन्द्र से हकियाक (हुबली) नामक शहर में विश्व

नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एक सप्ताह के लिए लगाई गयी थी। जिसको ६००० आत्माओं ने देखकर लाभ उठाया। तथा अनेक आत्माओं ने योग शिविर में भी भाग लिया।

भावनगर के ग्रामवासियों को ईश्वरीय संदेश—भावनगर सेवा केन्द्र की ओर से शिरोर, बोटाद, कारयाणी तथा मांडकी आदि गांवों में प्रदर्शनी व योग शिविर रखा गया जिससे १२०० आत्माओं ने लाभ लिया तथा ५० ने योग शिविर भी किया।

शहर के कणब्रीबाड, विद्या नगर, कृष्ण नगर, सिंधु नगर आदि में प्रवचन कार्यक्रम से भी अनेकानेक आत्माओं ने लाभ लिया, ६० ने साप्ताहिक पाठ्क्रम भी किया।

हरिद्वार ऋषिकेश में अर्धकुम्भ का मेला—हरिद्वार ऋषिकेश में अर्धकुम्भ के अवसर पर गवर्नमेन्ट प्रदर्शनी एरिया में प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर दूर-दूर से आये हुए दर्शनार्थियों ने प्रदर्शनी को देखा और पावन बनने का संदेश प्राप्त किया तथा ज्ञान-स्नान कर अपने को धन्य-धन्य समझने लगी।

लखनऊ में जन-जन को ईश्वरीय संदेश—लखनऊ (खुर्शिदबाग) सेवा केन्द्र की ओर से हनुमान मेला में प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें लगभग २००० आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया।

टेभूर्णी में ईश्वरीय संदेश—सोलापुर सेवा केन्द्र की ओर से यहाँ से ५० कि० मी० दूर टेभूर्णी नामक स्थान में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन अभियंता इन्जिनियर भ्राता बी० टी० पटिकर ने किया।

इस प्रदर्शनी के बाद प्रोजेक्टर (स्लाइड शो) भी दिखाया गया जिसके द्वारा लगभग ३००० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। ५० के लगभग ने योग शिविर भी किया।

पटियाला में कैदियों तथा अपंग अपाहिजों की सेवा—पटियाला सेवा केन्द्र की ओर से जिला सेन्ट्रल जेल में १०-सूत्री कार्यक्रम के अनुसार जेल के गुरुद्वारे में भाषण तथा प्रोजेक्टर शो हुआ तथा दिल्ली महायज्ञ के कार्य की सूचना भी दी गई। त्रिपरी Torn में भी प्रोजेक्टर शो हुआ तथा पिंगलवाड़ा (अपंग, अपाहिज) आश्रम में प्रोजेक्टर शो हुआ जिसमें कर्मों की गुह्य गति को समझाकर इस महायज्ञ में बुराइयों को स्वाहा करने की प्रेरणा भी दी गई।

कोननगर में काली पूजा पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी—कोन नगर में सेवा केन्द्र की ओर से काली पूजा के अवसर पर वहां प्रदर्शनी लगाई गई जिसे ६००० आत्माओं ने देखा तथा समझा कि हमारा पिता कौन हैं और उसका सन्देश हमारे प्रति क्या है। कुछेक आत्माओं ने योग शिविर भी किया।

मलकापूर में आध्यात्मिक शिव दर्शन प्रदर्शनी—बुरहानपुर सेवा केन्द्र की ओर से शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन मलकापुर में किया गया जिससे काफी लोगों ने लाभ लिया और योग शिविर भी किया, जिससे उन्हें सुख शान्ति की अनुभूति हुई और अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ भी दूर हुईं।

लुधियाना में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेला—लुधियाना में चरित्र निर्माण मेले का १० दिन के लिए आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन डा० अमरीकसिंह चीमा जी ने किया जो पंजाब एग्रिकलचर युनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर हैं, उसी दिन दीदी मनमोहिनी जी ने शिव बाबा का झण्डा लहराया। मेले को लगभग ७५ हज़ार आत्माओं ने देखा तथा ५० ने योग शिविर भी किया तथा ५० माताओं ने भी विशेष लाभ प्राप्त किया जिनका अलग सत्संग होता था।

समापन समारोह मुख्य अतिथि भ्राता डी० एस० कपूर, एडिश्नल डिपटी कमिश्नर ने किया, जिस में २५०० व्यक्ति उपस्थित थे।

डभाई में विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी और राजयोग शिविर—ज्ञानसागर शिव पिता का परिचय सर्व को निरन्तर मिलता रहे इसलिए बड़ौदा सेवाकेन्द्र की ओर से डभाई में प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पंचायत के प्रमुख भ्राता उमाकाँत जोशी जी ने किया। जिससे वहाँ के ५००० आत्माओं ने शिव पिता का सन्देश पाया तथा ५०० आत्माओं ने राजयोग शिविर कर परमानुभूति की।

बड़ौदा में डाक्टरों की सेवा—बड़ौदा सेवा केन्द्र पर १०-सूत्री कार्य-क्रम की वर्गीकरण सेवा के अन्तर्गत डाक्टरों का स्नेह मिलन किया गया जिसमें १८

डाक्टर्स पधारे इस अवसर पर ब्र० कु० डा० निरंजना बहन तथा ब्र० कु० डा० जयंत भाई ने उन्हें राजयोग कैसे डाक्टर के जीवन में मददगार बनता है तथा डाक्टर राजयोग द्वारा कैसे समाज सेवा में सहयोगी बन सकते हैं इन विषयों पर प्रवचन किये।

इलाकल में परमात्मा शिव का परिचय—इलाकल में निकटवर्ती गांव में युगादी महोत्सव मनाया गया। जिसमें जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने के लिए आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों तथा अन्य मनोरंजन कार्यक्रम के साथ तथा शोभा यात्रा और झांकीयों का कार्यक्रम किया गया जिसके द्वारा अनेकों आत्माओं को इसका वास्तविक महत्व समझाया गया जो बहुत सफल रहा।

बम्बई (गोरेगांव) में डाक्टरों की सेवा—दस सूत्री कार्यक्रम के डाक्टरों की विशेष सेवा के प्रमाण बम्बई, गोरेगांव सेवा केन्द्र पर 'मेडिटेशन एण्ड मेडीसिन' (Meditation & Medicine) नामक एक दिन के शिविर का आयोजन किया गया। पहले से डाक्टरों की स्वीकृति के फार्म भरवालिए गये थे। ३० डाक्टरों की एक शिविर को तीन भागों में बांटा गया जिसके तीन अलग विषय थे(१) एनाटोमी एण्ड फिजोलीजी ऑफ दी आरगन्स ऑफ मेडिटेशन (Anatomy and Phgsiology of the Organs of Meditations) (२) फारमेको-डायनेमिक्स आफ मेडिटेशन (Pharmaco-dynamics of Meditation) (३) प्रेक्टिकल एप्लिकेशन आफ मेडिटेशन इन मेडिसिन (Practical application of Meditetion in Medicine)

योग का शरीर की विभिन्न प्रणाली पर जो असर होता है उसे बताया गया। इस प्रकार डाक्टरों की रुचि काफी योग पर बढ़ी और दूसरी बार हमें अपने एसोसियेशन की तरफ से शिविर रखने का निमन्त्रण दिया।

हैदराबाद में वार्षिकोत्सव—हैदराबाद के विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय के ८वें वार्षिक दिवस पर ईश्वरीय संदेश देने के लिए एक सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भ्राता एम० एस० नरसिंहमा रेड्डी (प्रिंसिपल, निज़ाम कालेज) ने किया। इस अवसर पर अनेक शिक्षा विभाग के कार्यकर्त्ता, अध्यापकगण तथा प्रोफेसर उपस्थित थे। उन्हें गत वर्ष की सर्विस रिपोर्ट सुनाई गई उद्घाटन कर्त्ता भ्राता नरसिंहमा रेड्डी जी ने कहा कि यह संस्था विश्व में भ्रातत्व की भावना से चारित्रिक उत्थान एवं सर्व आत्माओं के कल्याण हेतु मानव सेवा में तत्पर है।

वर्तमान समय सभी परमात्मा से बेमुख होने एवं बुरी आदतों के वशीभूत होने का मुख्य कारण ही है स्वयं को न जानना।

कार्यक्रम के अन्त में राजयोग फिल्म भी दिखाई गई जिससे वह बहुत प्रभावित हुए एवं ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग का अभ्यास करने की उत्सुकता बढ़ी।

त्रिवेन्द्रम में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—त्रिवेन्द्रम सेवा केन्द्र की ओर से वहां की ओर से वहां की आल-इण्डिया इण्डस्ट्रियल प्रदर्शनी (All India Industrial Exhibition) में एक स्टाल लेकर प्रदर्शनी रखी गयी थी जिसमें शिव बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए हजारों आत्माओं को परिचय दिया गया।

ब्यावर में ईश्वरीय सन्देश—अजमेर सेवा केन्द्र की ओर से ब्यावर में एक प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया था जहां हजारों आत्माओं ने परमात्मा का परिचय प्राप्त किया वहाँ की अनेक आत्माओं ने योग शिविर करने के बाद स्वयं ही मकान का प्रबन्ध करके एक उप सेवा-केन्द्र खोलने का निमन्त्रण दिया है।

मिर्जापुर में प्रदर्शनी तथा राजयोग फिल्म—बापदादा को प्रत्यक्ष करने के लिए एक द्विदिवसीय गीता ज्ञान, योग धारणा प्रदर्शनी का आयोजन प्राथमिक पाठशाला नीबी (देवरिया) जिला मिर्जापुर में किया गया जिसका उद्घाटन उपरोक्त विद्यालय की प्रधान अध्यापिका बहन सावित्री देवी जी ने किया। प्रदर्शनी को आस-पास के ग्रामवासियों सहित ६ हजार भाई-बहनों ने लाभ लिया। रात में प्रवचन तथा मनोरंजन कार्यक्रम भी चले।

इसके साथ मिर्जापुर से १०० कि० मी० दूर ओवरा में क्लब नं० १, क्लब नं० २ व क्लब नं० ३ में राजयोग फिल्म शो किया जिससे ५००० आत्माओं ने परिचय प्राप्त किया।

जयपुर में महायज्ञ की प्रत्यक्षता—विश्व कल्याण महायज्ञ के १०-सूत्री कार्यक्रम के अनुसार, जयपुर

किशनपोल सेवाकेन्द्र की ओर से "फतेहरीबा" कालोनी में विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ की अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं म्युनिसपेलिटी के भूतपूर्व चेयरमैन, भ्राता देवी शंकर जी ने किया। प्रदर्शनी को अनेकानेक आत्माओं ने देखा एवं लाभ उठाया।

होशियारपुर के विभिन्न क्षेत्रों में ईश्वरीय संदेश—होशियारपुर सेवा-केन्द्र की ओर से निकटवर्ती बाबा बालकनाथ के मन्दिर में होने वाले विशाल मेले के अवसर पर प्रदर्शनी लगाई गई जिससे हजारों आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया। इसके बाद बैसाखी मेले के अवसर पर, शहर के साथ ही बहादुरपुर नाम से जो स्थान है वहाँ भी प्रदर्शनी लगाई। इसमें लगभग ४००० आत्माओं ने शिव बाबा का परिचय लिया।

मनिकपुर में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी—सतना सेवा केन्द्र की ओर से 'मनिकपुर' में 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' तथा राजयोग शिविर का आयोजन ४ से ८ जून तक धर्मशाला में किया गया। इस ईश्वरीय सेवा द्वारा लगभग हज़ार आत्माओं ने ईश्वरीय दिव्य संदेश प्राप्त किया तथा १०० आत्माओं ने राजयोग शिविर किया। पचास आत्माओं ने साप्ताहिक कोर्स किया और ७० आत्माएं प्रतिदिन क्लास में आकर सत्संग से लाभ ले रहे हैं।

कालावाड़ी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी—कालावाड़ी (सिरसा) उप सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ की जैन सभा धर्मशाला में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन सभा के प्रधान ने किया। इस प्रदर्शनी से लगभग ५०० आत्माओं ने लाभ लिया।

जगाधरी में सर्व धर्म सम्मेलन—जगाधरी के राधास्वामी सत्संग की ओर से नारायण गढ़ में एक सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनों को भी आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर उपस्थित सर्व धर्मों के मुख्य व्यक्तियों एवं हज़ारों नागरिकों के प्रति बहुत ही सरल और स्पष्ट शब्दों में विश्व का नव-निर्माण शीघ्र ही होने जा रहा है।

नई दिल्ली (मालवीय नगर) में अपंगों तथा हरिजनों की सेवा—मालवीय नगर सेवा केन्द्र की ओर से चिराग दिल्ली में आध्यात्मिक प्रवचनों द्वारा हरिजनों व अपंगों की सेवा की गयी। वहाँ पर प्रोजेक्टर शो द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का परिचय दिया गया। उसके परिणाम स्वरूप दो हरिजन कन्याएँ व कुछेक भाई कालका जी सेवा केन्द्र पर कोर्स कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त कालका जी के विधवा आश्रम में जहाँ लगभग ५० विधवायें रहती हैं। आध्यात्मिक प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ तथा योग शिविर का आयोजन भी किया गया जिससे काफ़ी महिलाओं ने लाभ उठाया।।

इसके अतिरिक्त वहाँ के एक हरिजन पार्षद की लौकिक माता जी के निधन पर बहनों ने आत्मा के आवागमन और कर्म-सिद्धान्त पर प्रवचन किए। इस अवसर पर लगभग ६०० व्यक्ति उपस्थित थे, जिनमें कई मेम्बर पार्लियामेण्ट तथा केन्द्रीय मन्त्री भ्राता बूटासिंह भी उपस्थित थे।

वर्धा में विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी—वर्धा सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के लोकमान्य वाचनालय में ४ दिनों के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के उप विभागीय अधिकारी भ्राता राठौड़ जी ने किया। इस प्रदर्शनी को लगभग ६००० भाई-बहनों ने देखा तथा ३०० लोगों ने योग शिविर किया।

इसके अतिरिक्त सेलू ग्राम में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी लाभ अनेकानेक ग्रामवासियों ने उठाया।

कासगंज के विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी—कासगंज सेवा केन्द्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय संदेश देने हेतू विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवम् प्रवचनों का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम विल्सी ग्राम में त्रिदिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन वहाँ के प्रसिद्ध ज्योतिषी पं० लक्ष्मी नारायण ने किया। इस प्रदर्शनी को हज़ारों लोगों के अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने भी देखा तथा इसे चरित्र-निर्माण का सहज साधन बताया। तत्पश्चात विसौली ग्राम की एक धर्मशाला में प्रदर्शनी की गई जिसका उद्घाटन धर्मशाला के

अध्यक्ष भ्राता गौरीशंकर ने किया। इस प्रदर्शनी को लगभग ४००० आत्माओं ने देखा।

तहसील चन्दोसी के टाऊनहॉल में एक अन्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन डिवाइन सोसायटी के सदस्य भ्राता सुरेश चन्द्र चौधरी ने किया। इस प्रदर्शनी को लगभग ४,००० लोगों ने देखा और अनेक लोगों ने यहाँ पर स्थाई सेवा-केन्द्र खोलने का अनुरोध किया।

सिकन्दराबाद केन्द्र का द्वितीय वार्षिक उत्सव—सिकन्दराबाद सेवा केन्द्र के द्वितीय वार्षिकोत्सव 'विश्व-कल्याण ज्ञान यज्ञ' आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वहाँ के राज्य मन्त्री भ्राता शेश्वतरम् तथा उस्मानियाँ यूनि० के तेलगू भाषा के प्रधान भ्राता वेकटाव धुँधलू आदि भी उपस्थित थे। उन्होंने प्रदर्शनी को देख कर इसे आध्यात्मिक उन्नति का सहज साधन बताया। इसके अतिरिक्त वहाँ के रोटेरी क्लब में ब्र० कु० बहनों के प्रवचन हुए।

१० सूत्री कार्यक्रम से सम्बन्धित समाचार वहाँ के सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित किया। जिनमें से आन्ध्र भूमि, आन्ध्र ज्योति, वारंगल वाणी, आदर्शिनी, यादु कृष्ण-भगवान, निजा निजालू, सन्डूला, बालमित्र आदि का नाम उल्लेखनीय हैं।

अमृतसर में अन्धों, कुष्ठियों, और कैदियों की सेवा की लहर—दिल्ली में होने वाले महायज्ञ के प्रति दस सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत अमृतसर में अन्धों, कुष्ठियों तथा कैदियों की सेवा की गई। सबसे पहले कुष्ठ आश्रम में, अपंगों, कुष्ठियों की, जहाँ की परिवार सहित अलग-अलग क्वार्टर बने हुए हैं, बहनों के पहुँचते हो सभी इकट्ठे हो गये पहले टेप बजाकर उन्हें शिव बाबा की याद दिलाई फिर उन्हें ज्ञान, योग का परिचय दिया गया, जिसे सुन वे बहुत प्रभावित हुए और कहा कि ये देवियाँ कम-से-कम मास में एक बार भगवान के महावाक्य सुनाकर जाया करें।

यहाँ ८०-९० अन्धे थे जिनका हैड मास्टर भी अन्धा था, टीचर स्टॉफ़ के ४-५ अध्यापक भी अन्धे ही थे बाकि क्लर्क, हैडक्लर्क, चपरासी २-३ अध्यापक नेत्रवान थे। उन्हें भी दस सूत्री कार्यक्रम के बारे में बतलाया और कोई-न-कोई बुराई को छुड़ाने के लिए प्रेरित किया।

इसके बाद सैन्ट्रल जेल में, जहाँ दो हज़ार कैदी थे, ईश्वरीय सेवा का कार्यक्रम रखा गया। कैदियों से बुराई छुड़वाने और एक गुण धारण करने के फार्म भरवाए गए। वहाँ के सुपरिन्टेन्डैट ने कहा—"यह तो आप देश के सुधार के लिए बड़ा ही अच्छा कार्य कर रही हैं। सरकार को अच्छा सहयोग दे रही हैं। सुपरिन्टेन्डैट, असिस्टैन्ट सुपरिन्टेन्डन्ट तथा वेलफेयर आफिसर आदि सारे स्टॉफ ने स्वागत करते हुए कहा कि आप अपनी राजयोग फ़िल्म भी यहाँ दिखाएँ तथा मास में कम-से-कम एक बार जरूर आयें।

देवपुर, धुलिया में हरिजनों की सेवा—१० सूत्री कार्यक्रम के अनुसार हरिजनों की सेवा के लिए देवपुर, धुलिया में एक सप्ताह के लिए विश्व-शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी एक वीरा देवी के मेले में लगाई गई। जिसका उद्घाटन प्रोफेसर यावलकर जी द्वारा किया गया, लगभग ३००० आत्माओं ने परमपिता परमात्मा का सच्चा परिचय पाया।

भावनगर में बुराई छुड़वाने फ़ार्म भरवाये गये—दिल्ली में होने वाले विश्व कल्याण महायज्ञ के लिए भावनगर में तन, मन, धन, वाचा तथा कर्मणा से फार्म भरवाने की सेवा में लगे हैं। बुराई छुड़वाने के फार्म भरवाने की सेवा से अनेक विशिष्ट व्यक्ति सेवा केन्द्र पर आ रहे हैं और ज्ञान-योग की प्राप्ति कर लाभावन्ति हो रहे हैं।

मुरादाबाद में हरिजनों की सेवा—मुरादाबाद सेवा केन्द्र की ओर से रामपुर में ४ दिवसीय प्रदर्शनी की गई जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया, उन्हें दिल्ली में होने वाले महा यज्ञ से १० सूत्रों के बारे में भी बताया गया।

फिर हरिजनों की सेवा के लिए दो स्थानों पर प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनाया जिससे वे आत्माएँ अत्यन्त प्रसन्न हुईं।

बरेली में हरिजनों की आध्यात्मिक सेवा एवं प्रदर्शनी—बरेली सेवा केन्द्र की ओर से हरिजन बस्ती में प्रवचन तथा प्रदर्शनी का प्रोग्राम रखा गया, वहाँ के हरिजन नेता भ्राता मोहन सिंह ने यह प्रोग्राम देखा और बोले यह बहुत सुन्दर कार्य है, हम इसे अपने मन्दिरों में करायेंगे यह ज्ञान बहुत ही सुन्दर है।

बरेली सेवा केन्द्र की ओर से शाहजानपुर में एक प्रदर्शनी बाबा विश्वनाथ मंदिर में लगाई गई जिसमें योग शिविर तथा प्रवचन का कार्य बहुत ही सुन्दर रहा इससे बहुत सी आत्माओं ने ईश्वरीय लाभ लिया।

कोटा में नेत्रहीनों, वांछित एवं गूँगों की सेवा—कोटा सेवा केन्द्र की ओर से नेत्रहीन सेवा का एक द्वि दिवसीय अधिवेशन वांछित एवं मूक विद्यालय गुमानपुरा में आयोजित किया गया इस अवसर पर ब्र० कु० सरोज बहन ने भी सारयुक्त प्रवचन किये। जिससे प्रदेश भर से आये लगभग १०० नेत्र हीन प्रति निधियों के अतिरिक्त स्थानीय आयोजकों ने भी लाभ लिया। नेत्र हीन सेवा संघ के प्रदेशाध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष ने स्थानीय सेवा केन्द्र पर आकर अवलोकन किया तथा इच्छा व्यक्त की कि ऐसी सेवाएँ नेत्रहीनों के लिए प्रदेश भर में आयोजित की जानी चाहिएँ।

अम्बाला में बुराई छुड़ाने की प्रतिज्ञा कराई गई—अम्बाला सेवा केन्द्र की ओर से रेलवे कालोनी में कार्यक्रम रखा गया प्रदर्शनी भी रखी गयी शाम को योग का कार्यक्रम था। उसके पश्चात् भाई बहनों ने बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा की जैसे सिनेमा, सिगरेट।

इसी रीति अम्बाला के निकट मलाना, शाहबाद तथा एयर फोर्स कम्पाउन्ड आदि में आध्यात्मिक कार्यक्रम जैसे प्रोजेक्टर शो, प्रवचन तथा बुराइयाँ छुड़ाने की प्रतिज्ञा कराई गई जिससे अनेकानेक आत्माओं ने सात्विकता धारण करने की प्रेरणा ली।

कटक में विभिन्न वर्गों की सेवा—कटक सेवा केन्द्र की ओर से कालेज स्क्वेयर में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसे देख कर रविन्दसा कालेज के प्रिंसिपल ने अपने कालेज में प्रदर्शनी लगाने का निमंत्रण दिया।

इसके बाद १०-सूत्री कार्यक्रम के अनुसार हरिजनों तथा विभिन्न वर्गों की सेवा की गई। सबसे पहले हरिजनों के वार्ड में प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया जिससे ३०० हरिजनों ने बहुत ध्यान से सुना, देखा और लाभ उठाया।

एक प्रोग्राम कटक के लायन्स क्लब में किया गया जहाँ ५० से अधिक प्रतिष्ठित व्यति उपस्थित थे। प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो द्वारा उन्हें बताया गया कि परमात्मा शिव द्वारा कैसे अब विश्व नव-निर्माण हो रहा है। यह कलियुगी दुनिया फिर सतयुगी दुनिया में बदल रही हैं।

एक प्रेस कानफ्रेन्स का आयोजन सेवा-क्रेन्द्र के म्यूजियम हाल में ही किया गया जिसमें १३ संवाद-दाता तथा पत्रकार उपस्थित थे तथा कटक के आल इण्डिया रेडियो के संवाददाता भी थे। ब्रह्माकुमार चन्द्रमोहन ने ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का परिचय दिया तथा कमलेश बहन ने सम्मेलन का उद्देश्य बताते बताते हुए १०-सूत्री कार्यक्रत का लक्ष्य बताया। इस प्रकार वे इस विद्यालय के कार्यों से प्रभावित हुए और अपने समाचार पत्रों में समाचार प्रकाशित करना स्वीकार किया।

अगले दिन आल इण्डिया रेडियो स्टेशन, कटक से ३/४ मिनट का समाचार प्रसारित हुआ और वहाँ के स्थानीय समाचार पत्रों, दैनिक समाज और प्रजा-तन्त्र ने भी इसे प्रकाशित किया, जिसे लाखों आत्माओं ने सुनकर तथा पढ़कर शिव बाबा का संदेश प्राप्त किया।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, १५१ ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिंटर्स, कृष्ण नगर दिल्ली-५१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

यह चित्र अहमदाबाद (मनीनगर) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम का है। वहाँ के जज भ्राता बी० बी० वंदरकर जी अपना राजयोग का अनुभव सुना रहे हैं।

यह चित्र जालन्धर सेवाकेन्द्र द्वारा वहाँ की जिला सुधार घर जेल में कैदियों के लाभार्थ आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। मंच पर ब्र० कु० राज, ब्र० कु० शुक्ला एवं संजीवनी बहन बैठी हैं। कुछेक छोटी कन्याएँ प्रेरणादायक गीत सुना रही हैं जिसे कैदी बड़े ध्यान पूर्वक सुन रहे हैं।

यह चित्र तुमकुर (कर्नाटक) सेवाकेन्द्र की ओर से गुब्बी नामक ग्राम में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह का है। मंच पर कालीदास हाई स्कूल के हैड मास्टर चिदम्बर आश्रम स्कूल के प्रधानाचार्य के साथ ब्र० कु० विजया व नगरपालिका के सदस्य भ्राता जी० एच० गुरु आदि बैठे हैं।

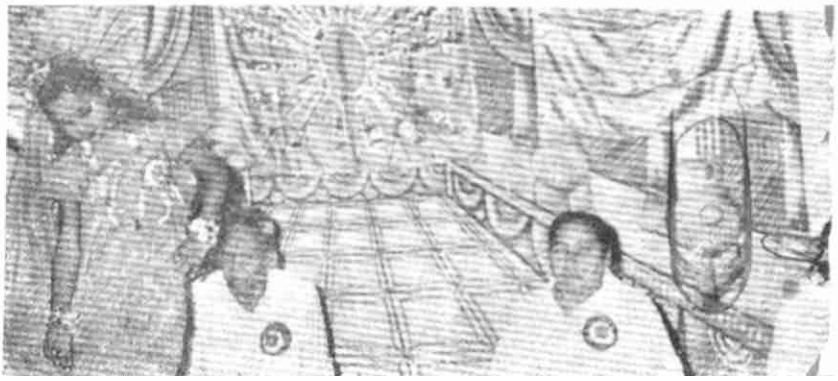

इस चित्र में झाँसी सेवा केन्द्र द्वारा ललितपुर में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् वहाँ के कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष भ्राता बृजनन्दन शर्मा ब्र० कु० विमला व मिन/क्षी जी मंच पर बैठी हैं। एक छोटी-सी कन्या स्वागत गीत प्रस्तुत कर रही है।

यह चित्र धुलिया सेवाकेन्द्र द्वारा वहां के एक हाईस्कूल में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। स्कूल के चेयरमैन भ्राता मोतीलाल जी के साथ वहाँ के बहन भाई खड़े हैं।

यह चित्र साँपला सेवा केन्द्र द्वारा महिलाओं के लिए आयोजत आध्यात्मिक कार्यक्रम का है। ब्रह्माकुमारी बहनों के बीच वहाँ की महिलाएँ बैठी हैं।

यह चित्र पाटन सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है।

यह चित्र राँची सेवा केन्द्र द्वारा वहाँ की हरिजन बस्ती में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का है। चित्र में हरिजनों के अध्यक्ष भ्राता मुलाराम व अन्य बहन भाई खड़े हैं।